16 अप्रैल 2020 ■ ₹ 15

फार्म एन फूड

जमीन में यकीन, यकीन में धन

गेहूं कटाई से मंडी तक सावधानी

कृषि क्षेत्र में रोजगार

पशुपालन में टीकाकरण

अच्छी मिट्टी से मिले अच्छी पैदावार

पपीते की खास प्रजातियां

सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

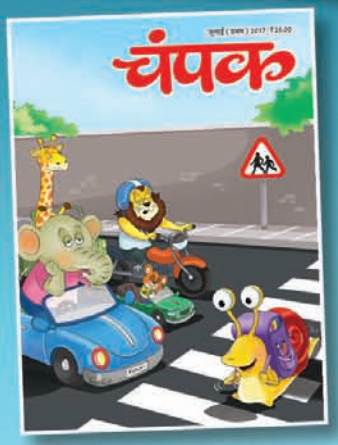

सुखी जीवन संतुष्ट परिवार समृद्ध घर की मार्गदर्शक पत्रिकाएं

हमारा उद्देश्य पाठकों को ऐसे नए युग में ले जाना है जहां कड़ी मेहनत, लगन व बुद्धि के बल से सफलता प्राप्त होती है न कि जाति, धर्म, पाखंड, जोड़तोड़ या भ्रष्टाचार की वजह से. यदि हम आत्मसम्मान के साथ सिर ऊंचा कर के जीना चाहते हैं तो हमें अपना भविष्य आत्मबल पर तय करना होगा.

दिल्ली प्रैस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 119, टोल फ्री फोन नं. : 1800-103-8880,
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

संपादकीय

आप के लिए

देश के किसानों के लिए यह महीना बहुत ही मायने रखता है. महीनों की मेहनत और इंतजार के बाद किसान की रबी की फसल तैयार हो जाती है, लेकिन किसान इस बार कोरोना संक्रमण के चलते इस समस्या से पार नहीं पा रहा है. ट्रकों की आवाजाही बंद है. मजदूर नहीं मिल रहे हैं. मशीनों के लाने और ले जाने में तमाम दिक्कतें आ रही हैं. किसान औनेपौने दामों पर फसल बेचने को मजबूर हैं.

हालांकि सरकार द्वारा किसानों को अनेक राहत दी गई हैं. लौकडाउन के दौरान बाजार हस्तक्षेप योजना लागू कर

दी गई है. इस योजना के तहत जल्द खराब होने वाले फल, सब्जियों वगैरह को राज्य सरकारों द्वारा खरीदा जा सकेगा. केंद्र सरकार द्वारा इन राज्यों को इस नुकसान की भरपाई की जाएगी.

किसानों की उपज को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में दिक्कत न हो, इस के लिए सरकार द्वारा टोल फ्री नंबर 18001804200 और 14488 भी जारी किया है. इस पर किसान मोबाइल फोन या लैंडलाइन फोन की मदद से संबंधित जानकारी ले सकते हैं.

यह मदद देश के उन सभी ट्रक चालकों पर, व्यापारियों पर, खुदरा कारोबारियों पर या अन्य किसी भी पक्ष को जो कृषि के सामान को ले जाते हैं, उन के लिए है.

इस के अलावा गेहूं आदि की फसलों को देर से बेचने पर भी सरकार द्वारा कुछ अनुदान किसानों को दिया जाएगा. देखना यह है कि सरकार द्वारा उठाए गए अनेक कदम किसान तक पहुंचते भी हैं या वहीं कदमताल करते रह जाएंगे.

इस में जो...

फार्म फूड 16 अप्रैल, 2020

गेहूं कटाई से मंडी तक सावधानी

भारत में गेहूं की बहुत ज्यादा खपत होती है, इसलिए इस का उत्पादन भी बहुत होता है. गेहूं की फसल उगाने से ज्यादा यह बात भी बहुत अहम होती है कि गेहूं की कटाई कैसे की जाए और इस के लिए किस नई तकनीक का इस्तेमाल किया जाए.

6 पराली प्रबंधन की तकनीक
9 पशुपालन में टीकाकरण रखें ध्यान
10 कृषि क्षेत्र में हैं रोजगार के ढेरों अवसर
15 खबरें खेतखलिहानों की
22 सवाल किसानों के, खतोकिताबत
24 अच्छी मिट्टी से मिले अच्छी पैदावार
26 लाख कीटपालन
28 सब्जियों में सिंचाई
29 खेतीकिसानी में रसायनमुक्त होना
30 पपीते की खेती और खास प्रजातियां

कुछ कहती हैं तसवीरें 34

मक्का खाने में स्वादिष्ठ होने के साथसाथ बहुत पौष्टिक भी होता है. इस का कई तरह से इस्तेमाल किया जाता है, इसलिए बहुत से देशों में इस की खेती की जाती है. चूंकि अमेरिका में बड़ेबड़े खेत होते हैं तो वहां इस के लिए मशीनों का इस्तेमाल होता है.

फार्म फूड
जमीन में खनीज, खनीज में धन
16 अप्रैल 2020, अंक: 316
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

दिल्ली प्रैस
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **अन्य कार्यालय:** 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कर्निघम रोड, बेंगलुरु-560052. ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय). बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय). 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, कोलकाता-700026. 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, चेन्नई-600008. 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003. फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, लखनऊ-226001. बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, भोपाल-462011. 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, पटना-800001. गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, जयपुर-302006. जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, कोच्चि-682031.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से : छपने के लिए भेजे जाने वाले लेख वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी रचनाएं ज्यादा पसंद की जाएंगी.

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Pte. Ltd., New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888. एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264. टोल फ्री नंबर : 18001038880 (सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/ह्वाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

फार्म एन फूड पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 15 रु.
1 साल के लिए 589 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)
2 साल के लिए 1139 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि. ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

गेहूं कटाई से मंडी तक सावधानी

* शैलेंद्र सिंह

इनसान को भोजन देने वाली सब से खास फसल गेहूं है. दुनिया में सब से ज्यादा पैदावार देने वाली फसलों में पहले नंबर पर मक्का, दूसरे पर गेहूं और तीसरे पर धान का नाम आता है. गेहूं के आटे से रोटी के अलावा कुकीज, दलिया, सेंवई और नूडल्स जैसी खाने वाली चीजें बनाई जाती हैं. इस के अलावा बीयर और शराब भी इस से तैयार होती हैं.

गेहूं का भूसा पशुओं के चारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है. गांव में रहने वाले किसान कई बार गेहूं के पौधों से अपने घर का छप्पर डालने का काम भी करते हैं. गेंहू में प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट्स प्रमुख मात्रा में पाया जाता है.

पूरे संसार में चीन के बाद सब से ज्यादा गेहूं भारत में ही पैदा होता है. गेहूं की बोआई का काम दिसंबर महीने तक पूरा हो जाता है. अप्रैल माह से इस की कटाई शुरू हो जाती है.

अप्रैल का महीना आते ही गेहूं की फसल सुनहरे रंग में खेत में अनोखी छटा बिखेरने लगती है. इस की सोंधीसोंधी खुशबू खेतों से ही आने लगती है. भारत कृषि प्रधान देश है. यहां हर तरह के किसान रहते हैं. बड़ी जोत से ले कर छोटी जोत वाले सभी किसान गेहूं की खेती करते हैं. इन सब का गेहूं काटने का अपना अलगअलग तरीका होता है.

छोटे किसान अभी भी हाथ से गेहूं की कटाई कर के उसे खलिहान में इकट्ठा करते हैं. इस के बाद थ्रेशर से गेहूं को पौधे से अलग किया जाता है. बड़े किसान खेत में ही थ्रेशर लगा कर गेहूं निकालते हैं. बड़े किसान, जिन के पास बड़े खेत होते हैं, वे कंबाइन मशीन से गेहूं की कटाई का काम करते हैं. इस से गेहूं अलग हो जाता है. किसानों को इस में गेहूं का भूसा नहीं मिल पाता है, इसलिए इस का इस्तेमाल साधारण किसान नहीं करते हैं.

ज्यादातर किसान थ्रेशर का इस्तेमाल कर के ही गेहूं की कटाई करते हैं.

बरतें सावधानी

थ्रेशर से गेहूं की कटाई के दौरान किसानों को सावधानी रखनी चाहिए, ताकि किसी तरह की दुर्घटना न हो सके. थ्रेशर में गेहूं लगाते समय उचित दूरी बना कर रखें. इस दौरान ऐसे कपड़े पहनें, जो थ्रेशर में फंस न सकें. कई बार थ्रेशर के करीब आने से किसान का कोई कपड़ा उस में फंस जाता है, जिस से दुर्घटना की संभावना बनी रहती है. कई बार महिला किसान थ्रेशर में गेहूं लगाने का काम करती है. उन को अपने कपड़ों का खास खयाल रखना चाहिए. गांवों में किसान महिलाएं घूंघट डाल कर काम करती हैं, ऐसे में कपड़ा फंसने की संभावना ज्यादा हो जाती है.

थ्रेशर को सही ढंग से जांचपरख कर चलाएं. थ्रेशर से कई बार चिनगारी निकल पड़ती है. ऐसे में आग लगने की संभावना ज्यादा होती है. इस का खास खयाल रखें. थ्रेशर को समयसमय पर ठंडा हो जाने दें. उस की आयलिंग और ग्रीसिंग करते रहें. कटाई के समय आसपास बालटी में पानी भर कर जरूर रखें, ताकि अगर चिनगारी निकले, तो उसे तुरंत बुझा सकें.

कटाई के बाद गेहूं को सही तरह से रखने के लिए पहले उसे साफ करें. उस के बाद बोरे में भर कर रखें. अगर गेहूं का भंडारण लंबे समय तक करना है, तो गेहूं को कीड़ों से बचाने वाली दवा डाल कर रखें.

कुछ लोग कीड़ों से गेहूं को बचाने के लिए नीम की पत्ती डालते हैं. गेहूं का भंडारण ऐसी जगह पर करें, जहां नमी न हो. नमी वाली जगहों पर कीड़े लगने का खतरा ज्यादा होता है. गेहूं को कीड़ों से बचाने वाली कई तरह की दवाएं बाजार में आती हैं. अपनी जरूरत के हिसाब से किसी अच्छी दवा का चुनाव करें.

गांवों में किसान गेहूं के बोरों को नमी से बचाने के लिए गेहूं के भूसे के बीच रखते हैं. गेहूं का भूसा पशुओं का सब से प्रमुख खाना होता है. इस कारण भूसे को भी संभाल कर रखें.

अगर किसान के पास पशु नहीं हैं, तो भूसा बाजार में बिक भी जाता है. सही भंडारण होने से किसान गेहूं की कीमत बढ़ने पर उस को बेच सकता है. कई बार फसल के समय गेहूं की कीमत कम होती है. ऐसे में कीमत बढ़ने पर भंडारण किया गेहूं बेचने पर अच्छा मूल्य मिल जाता है.

क्रय केंद्र जाने से पहले

कई बार किसानों के पास पैसे की किल्लत होती है. ऐसे में वे एक फसल को बेच कर ही दूसरी फसल की बोआई का काम करते हैं. ऐसे किसान फसल के तैयार होते ही उसे ले कर बाजार बेचने पहुंच जाते हैं. ऐसे किसानों को फसल बेचने से पहले कई अनाज मंडियों में गेहूं का भाव पता कर लेना चाहिए. जहां ज्यादा अच्छा भाव हो, वहीं अपना गेहूं ले जाना चाहिए.

किसान क्रय केंद्रों पर गेहूं ले जाने से पहले उस को सही से नापतौल कर लेना चाहिए. इस से क्रय केंद्रों पर गलत नापतौल का खतरा नहीं होगा. किसान अपने गेहूं को सही तरह से साफ कर के ले जाएं. कई बार क्रय केंद्रों पर खराब किस्म के गेहूं को नहीं खरीदा जाता है. ऐसे में किसानों को केवल परेशान ही होना पड़ता है, इसलिए कटा और खराब गेहूं बाहर निकाल दें. इस का दलिया या आटा बनवाया जा सकता है.

सरकारी कमर्चारी गेहूं की खरीदारी में कई तरह के अड़ंगे लगाते हैं. इस से बचने के लिए जरूरी है कि क्रय केंद्र पर गेहूं ले जाने से पहले वहां के बारे में जरूरी जानकारी एकत्र कर लें.

जब किसान गेहूं ले कर वहां पहुंच जाते हैं, तो उस के सामने गेहूं औनेपौने दाम पर बेचने के अलावा दूसरा रास्ता नहीं रहता है. गेहूं ले कर कुछ समय के लिए क्रय केंद्र पर किसान को रुकना पड़ सकता है.

ऐसे में पहले से तैयारी कर के जाएं. गेहूं को ढकने का इंतजाम जरूर करें. कई बार मईजून के महीने में अचानक बारिश होने लगती है. ऐसे में गेहूं भीग न जाए, इस का खयाल रखना जरूरी होता है. ■

पराली प्रबंधन की तकनीक

* अरुण कुमार और
डा. आरएस सेंगर

भारत के कई राज्य धुंध छा जाने की समस्या से परेशान हैं. इस के लिए धान की पराली जलाने वाले किसानों को उत्तरदायी माना जा रहा है. यह समस्या सर्दियों में और भी गंभीर होती है, क्योंकि यह खरीफ की फसल धान की कटाई के बाद खेत मे बचे फसल अवशेष, जिसे पराली कहते हैं, को बड़ी मात्रा में जलाने के चलते होती है.

भारत में तकरीबन 388 मिलियन टन फसल अवशेष का उत्पादन हर साल होता है. कुल फसल अवशेष का तकरीबन 27 फीसदी गेहूं का अवशेष और 51 फीसदी धान का अवशेष और बाकी दूसरी फसलों के अवशेष होते हैं.

गेहूं और दूसरी फसलों के अवशेष या भूसा पशुओं को खिलाने के काम में लाया जाता है, लेकिन धान के फसल अवशेष या भूसे में औक्जेलिक अम्ल और सिलिका की मात्रा ज्यादा होने की वजह से इस के पुआल को पशुओं के चारे के रूप में प्रयोग नहीं किया जाता है.

धान की पराली जलाने से विभिन्न जहरीली गैसें जैसे कार्बन मोनो औक्साइड, कार्बन डाई औक्साइड, बेंजीन, नाइट्रस औक्साइड और एरोसोल निकल कर वायुमंडल की साफ हवा में मिल कर उसे प्रदूषित करती है. नतीजतन, पूरा वातावरण दूषित हो जाता है.

ये जहरीली गैसें वातावरण में फैल कर जीवों में विभिन्न घातक बीमारियों जैसे त्वचा की बीमारियां, आंखों की बीमारियां, सांस व फेफड़ों की बीमारियां, कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां फैलाती हैं, इसलिए किसान पराली

जलाने से बचें. किसान इस से न केवल पर्यावरण को दूषित होने से बचा सकते हैं, अपितु पैसे भी कमा सकते हैं.

किसानों द्वारा पुआल जलाए जाने की वजह

धान के पुआल में कार्बन और नाइट्रोजन की मात्रा ज्यादा होने की वजह से अगर इसे सीधा खेत में जोत दिया जाए, तो मिट्टी की उर्वराशक्ति बढ़ाने के साथसाथ पौध विषाक्तता भी बढ़ती है. इस का सीधा असर बीज जमने और उत्पादन पर पड़ता है और इस प्रक्रिया में समय भी लगता है.

धान की पुआल में सिलिका व लिग्निन की ज्यादा मात्रा होने के चलते इसे सड़ने में अधिक समय लगता है, इसलिए किसान इसे पूरे खेत में फैला कर उस के ऊपर पर्याप्त मात्रा में यूरिया छिड़क कर पानी भर देते हैं. इस से पुआल जल्दी सड़ तो जाता है, लेकिन इस में यूरिया की मात्रा ज्यादा होने के चलते कार्बन व नाइट्रोजन के अनुपात में कमी आ जाती है.

अगर कार्बन व नाइट्रोजन का यह अनुपात 25:1 से कम हो जाए, तो मिट्टी के सूक्ष्म जीव मौजूद नाइट्रोजन का उपयोग नहीं कर पाते, जिस की वजह से नाइट्रोजन परिवर्तित हो कर अमोनिया बन जाती है. इस तरह नाइट्रोजन का उचित उपयोग नहीं हो पाता है.

इस के अलावा पुआल को खेत में जोत देने से मिट्टी के पोषक तत्त्व जैसे नाइट्रोजन गतिहीन या स्थिर हो जाती है, जिस से यह पौधों को उपलब्ध नहीं हो पाती, इसलिए किसान धान की फसल काटने के बाद गेहूं बोने की तैयारी में लगे होते हैं, उन के पास समय की कमी होने के चलते जल्दबाजी में पुआल खेत में फैला कर उस में आग लगा देते हैं.

पुआल जलाने के हानिकारक प्रभाव

- मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों की कमी.
- मिट्टी की संरचना में गिरावट.
- मिट्टी की जैविक गतिविधियों में कमी होना.
- पर्यावरण प्रदूषण का बढ़ना. इस की वजह से जीवजंतुओं की सेहत पर बुरा असर होना.

धान के पुआल से कंपोस्ट बनाना एक सुरक्षित विकल्प : सूक्ष्म जीवाणुओं की मदद से कार्बनिक पदार्थों का औक्सीकृत जैव में बदलाव की प्रक्रिया को कंपोस्ट बनाना कहते हैं. इस से बनने वाला उत्पाद कंपोस्ट कहलाता है.

कंपोस्ट को मिट्टी में मिलाने से पौधे और मिट्टी दोनों को फायदा होता है. यह पौधों की बढ़वार व विकास के लिए पोषक तत्त्व प्रदान करता है. साथ ही, मिट्टी की उर्वराशक्ति में बढ़ोतरी करता है.

कंपोस्ट बनाने के लिए धान की कटाई के बाद बची पुआल को छोटेछोटे टुकड़ों में काट लेते हैं. पुआल से कंपोस्ट बनाने के लिए गड्ढा विधि व ढेर विधि को प्रयोग में लाया जाता है.

गड्ढे की लंबाई आमतौर पर 6 से 10 मीटर और चौड़ाई व गहराई 1 मीटर रखते हैं. पुआल ज्यादा मात्रा में होने पर गड्ढों की तादाद बढ़ाई जा सकती है. इस के बाद पुआल के छोटेछोटे कटे टुकड़ों को रात में पानी में डुबो कर नम करते हैं और फिर गड्ढे में भर कर अब इस के ऊपर गोबर की एक परत लगाते हैं. इस तरह कुल 3 परतें बनाई जाती हैं.

पुआल के सड़ाने की क्रिया को तेज करने के लिए इस में 50 ग्राम प्रति 100 किलोग्राम भूसा की दर से ट्राइकोडर्मा कवक मिलाया जा सकता है और कंपोस्ट का कार्बन व नाइट्रोजन के अनुपात को कम करने के लिए इस में 0.25 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति 100 किलोग्राम पुआल की दर से मिलाते हैं.

खाद को ज्यादा प्रभावशाली बनाने के लिए इस में पाइराइट 10 फीसदी की दर से और रौक फास्फेट 1 फीसदी की दर के मिश्रण का प्रयोग किया जा सकता है. इस में समयसमय पर पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए, ताकि इस में पर्याप्त मात्रा में नमी बनी रहे. इस में हवा के आनेजाने के लिए 15-20 दिन के अंतराल पर पलटाई कर देते हैं, जिस से ऊपरी व निचली सतह अच्छी तरह आपस में मिल जाती है. कंपोस्ट बनने की पूरी प्रक्रिया में 4 महीने का

समय लगता है. इस के बाद इसे खेत में डाला जा सकता है.

पुआल से तैयार कंपोस्ट को जमीन में डालने के फायदे

फसल अवशेषों का इस्तेमाल कर के उस से बेहतर क्वालिटी की खाद बना कर खेतों में डाली जा सकती है. इस प्रकार फसल अवशेषों का प्रबंधन आसानी से किया जा सकता है और पर्यावरण को भी प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है.

पुआल से बनी खाद मिट्टी की भौतिक, रासायनिक व जैविक अवस्था सुधारती है और पौधों के जरूरी पोषक तत्त्वों के मिनरलाइजेशन को बढ़ाती है, जिस से कि पोषक तत्त्व मिट्टी में ज्यादा समय तक बने रहते हैं.

साथ ही, यह खाद मिट्टी में मौजूद फायदेमंद सूक्ष्म जीवों के बीच संतुलन बनाए रखने का भी महत्त्वपूर्ण काम करती है. इसलिए यह खाद फसल की बढ़वार और विकास को बढ़ा कर फसलोत्पादन को बढ़ाती है. साथ ही, पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाती है.

कैसे पहचानें कंपोस्ट खाद

☛ इस कंपोस्ट खाद का रंग काला या गहरा भूरा होता है. और इस में 30-50 फीसदी तक नमी की मात्रा होनी चाहिए.

☛ इस की गंध मिट्टी जैसी आनी चाहिए और इस में दूसरी किसी तरह की गंध जैसे-तेज खट्टी, अमोनिया या सड़ी हुई बदबू नहीं आनी चाहिए.

☛ तैयार कंपोस्ट खाद का पीएच मान 5 से 8 के बीच में होना चाहिए.

☛ इस में 35-45 फीसदी तक जैव पदार्थ की मात्रा होनी चाहिए.

☛ इस में 30-35:1 तक कार्बन: नाइट्रोजन का अनुपात अच्छा माना गया है.

पुआल से कंपोस्ट बनाते समय बरतें सावधानियां

☛ धान के पुआल में कार्बन : नाइट्रोजन अनुपात (90:1) अधिक होने के कारण हानिकारक होता है. इसे कम करने के लिए (50:1) खाद बनाते समय उस में गोबर (8:1) या कुक्कुट बीट या यूरिया (1 फीसदी) मिलाते हैं.

☛ तकरीबन 65 फीसदी नमी की मात्रा धान के पुआल में खाद बनाते समय रखनी चाहिए.

☛ तकरीबन 15 दिन से ले कर 20 दिन के बाद खाद की पलटाई जरूर करें.

☛ कंपोस्ट का तापमान 35 डिगरी सैंटीग्रेड तक होने पर उसे ज्यादा पौष्टिक बनाने के लिए उस में एजोटोबैक्टर व एजोस्प्रिलम का कल्चर मिलाते हैं. इस से खाद में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ जाती है. खाद में फास्फोरस की मात्रा बढ़ाने के लिए उस में फास्फोरस विलेयक बैक्टीरियल कल्चर को मिलाया जाना अच्छा माना गया है.

☛ अपरिपक्व कंपोस्ट में फेनोलिक यौगिकों की मात्रा ज्यादा होने की वजह से पौध विषाक्तता हो जाती है, इसलिए पूरी तरह से परिपक्व खाद को ही इस्तेमाल में लाना चाहिए.

बिजली उत्पादन

धान के पुआल का इस्तेमाल बिजली उत्पादन के लिए भी किया जाता है. इस से बिजली उत्पादन संयंत्र की आपूर्ति बिजली बनाने के लिए की जा सकती है. बायोमास आधारित बिजली संयंत्रों को बढ़ावा देने के लिए सरकार विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं चला रही है.

पंजाब में बायोमास आधारित बिजली संयंत्रों द्वारा 62.5 मेगावाट बिजली उत्पादन के लिए तकरीबन 0.48 मिलियन टन धान के पुआल का इस्तेमाल किया जा रहा है. इस से विभिन्न राज्य उद्योग ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन रहे हैं.

बायोगैस उत्पादन

धान के पुआल से प्रचुर मात्रा में बायोगैस का उत्पादन किया जा सकता है. धान के पुआल को औक्सीजन की गैरमौजूदगी में सूक्ष्म जीवों के साथ विघटित करने से बायोगैस बनती है.

यह बायोगैस वाहनों में सीएनजी के स्थान पर इस्तेमाल में लाई जा सकती है. सरकार की ओर से बायोगैस उत्पादन पर विभिन्न सब्सिडी की योजना चल रही है.

मशरूम की खेती

मशरूम की खेती करने के लिए धान के पुआल को

बेझिझक इस्तेमाल में लाया जा सकता है. बटन मशरूम के उत्पादन के लिए, पुआल में से अतिरिक्त पानी की निकासी यानी पानी को निकालना, पुआल को काटने और बंडलों को तैयार करने जैसी कुछ क्रियाएं बेहद जरूरी हैं.

आंकड़ों से यह भी पता चला है कि धान के पुआल को कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल करते हुए इन कामों के लिए अनुमानित लागत 475 रुपए प्रति क्विंटल है, जबकि यह 725 रुपए प्रति क्विंटल है, जब गेहूं के भूसे को आधार सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता है.

इसलिए, मशरूम उत्पादन के लिए धान के पुआल का इस्तेमाल कर मशरूम उत्पादकों को शुद्ध बचत के रूप में 250 प्रति क्विंटल की राशि बचाने में मदद मिल सकती है. ■

पशुपालन में टीकाकरण रखें ध्यान

एक प्रचलित कहावत है कि रोगों से बचाव, उस के इलाज की अपेक्षा बेहतर विकल्प है, इसलिए कुछ खास रोगों से बचाव के लिए समय पर टीके लगवाएं. पशुओं को अनेक संक्रामक रोगों से बचाने के लिए उन्हें समय पर टीके लगवाना बहुत जरूरी है.

टीके खास रोगों की रोकथाम के लिए बनाए जाते हैं और ये टीके सही समय पर डाक्टरों द्वारा लगाए जाते हैं. ये टीके होने वाले रोगों को रोकने की कूवत बढ़ाते हैं और अप्रैल महीने के आखिरी सप्ताह को विश्वभर में 'विश्व टीकाकरण सप्ताह' के रूप में भी मनाया जाता है.

भारत में पशुओं के लिए टीकाकरण खासकर 4-5 बीमारियों के विरुद्ध चलाया जाता है. अब समय के साथसाथ पशुपालक भी इस टीकाकरण का ध्यान रखने लगे हैं. जो लोग पशुपालन करते हैं, उन्हें अपने पशुओं के टीकाकरण को ले कर डायरी बनानी चाहिए, जिस से कोई टीका छूटने न पाए.

पशुओं में लगने वाले टीके

खुरपका व मुंहपका : पशुओं में होने वाला यह खास रोग है और इस की रोकथाम के लिए पशुओं में यह टीका 4 से 8 माह की उम्र में लगाया जाता है उसे 4 हफ्ते के बाद बूस्टर डोज दी जाती है. इस के बाद साल में 2 बार टीके लगवाने चाहिए. एक टीका फरवरी माह के आखिरी हफ्ते से मार्च माह के पहले हफ्ते तक और दूसरा टीका अगस्त माह से सितंबर माह तक लगाया जाता है.

पशु जब 6 माह का हो जाए, तब गलघोंटू और लंगड़ी का टीका लगाया जाता है. इस बीमारी का टीका मई से जून माह तक लगवा लें. कोशिश करें, यह टीका बारिश के मौसम से पहले लगवा लें.

✻ भानु प्रकाश राणा

4 से 8 माह की उम्र में गर्भपात का टीका लगाया जाता है, जो पशु को जीवनभर रोग प्रतिरोधात्मक कूवत को बढ़ाता है.

पशु टीकाकरण में सावधानी

☛ टीके लगवाते समय पशु स्वस्थ होना चाहिए.

☛ पशु बीमारी वाले मौसम (बरसात से) एक महीने पहले तक टीका लगवा लेना चाहिए.

☛ टीके का सही तापमान पर रखना चाहिए.

☛ टीका लगवाते समय कोई अन्य दवा या एंटीबायोटिक्स पशु को नहीं दिए जाने चाहिए.

☛ अगर पशु गर्भ से है तो टीकाकरण से पहले पशु विशेषज्ञ को इस की जानकारी देनी चाहिए.

☛ टीकाकरण की सभी जानकारी डायरी में नोट करनी चाहिए.

☛ पशु को टीका लगाने के बाद उसे धूप में नहीं छोड़ना चाहिए.

☛ टीकाकरण के लिए सुबह का समय अच्छा रहता है.

☛ टीके को गरमी व सीधे धूप से बचा कर रखना चाहिए.

☛ अगर टीके को गलत तरीके से लगाया जाता है या समय पर नहीं लगाया जाताहै, तो वह टीका बेकार भी हो सकता है, इसलिए सभी टीके समय पर लगाएं.

☛ अगर आप के झुंड में पशु हैं तो खास ध्यान रखें. पूरे झुंड का टीकाकरण समय पर सही तरीके से करवाएं, वरना उन में बीमारी फैल सकती है.

☛ पशुओं में अनेक टीके मुफ्त भी लगाए जाते हैं. इस के किए जगहजगह कृषि केंद्रों में पशु विशेषज्ञ भी हैं, इसलिए पशु में कोई भी समस्या आने पर या टीकों की जानकारी लेने के लिए आप उन से भी संपर्क कर सकते हैं. ■

कृषि क्षेत्र में हैं

* डा. राकेश सेंगर, अभिषेक सिंह, आलोक कुमार सिंह

हमारे देश के तकरीबन 64 फीसदी लोग किसी न किसी रूप से कृषि से जुड़े हैं. इस में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं. नए दौर में कृषि का सही तरीके से अध्ययन कर के आप एक अच्छा कैरियर बना सकते हैं.

12वीं पास होने के बाद छात्र बहुत परेशान से रहते हैं कि आगे चल कर किस फील्ड को चुनें, जिस से बेहतर रोजगार मिल सके. किसी से पूछने पर अधिकतर लोग इंजीनियरिंग, डाक्टर आदि जैसे कोर्स या डिगरी करने की सलाह ही देते हैं, लेकिन आप के पास इस के अलावा भी विकल्प मौजूद हैं.

जैसा कि आप को पता ही है कि किसी भी व्यक्ति की प्रारंभिक जरूरतें रोटी, कपड़ा और मकान हैं. अगर आप इन से जुड़े कोई कोर्स करना चाहते हैं, तो आप एक अच्छाखासा रोजगार तलाश सकते हैं.

एग्रीकल्चर यानी कृषि का नाम सुनते ही मन में बस एक ही बात आती है कि क्या इतना पढ़ कर किसान बनेंगे? तो हम आप की इस सोच को बदलना चाहेंगे कि एग्रीकल्चर का मतलब केवल पारंपरिक किसान बनना ही नहीं, बल्कि इस क्षेत्र में तकनीक से जुड़े अनेक विषय हैं, जिन की पढ़ाई कर के आजकल के युवा अपना कैरियर बना सकते हैं.

एग्रीकल्चर क्या है क्या : यह शब्द एक लैटिन शब्द है. यह 2 शब्दों से मिल कर बना है, 'एगर' और 'कल्चर'. 'एगर' का मतलब होता है 'मिट्टी' और 'कल्चर' का मतलब होता है 'संस्कृति'. दूसरे शब्दों में, 'पौधों या पशुओं से संबंधित उत्पादों की खेती करना या उत्पादन करना एग्रीकल्चर कहलाता है.'

एग्रीकल्चर या कृषि के अंतर्गत फसल उत्पादन, पशुपालन और डेरी विज्ञान, कृषि रसायन और मृदा विज्ञान, बागबानी, कृषि अर्थशास्त्र, कृषि इंजीनियरिंग, वनस्पति विज्ञान, प्लांट पैथोलौजी, विस्तार शिक्षा और विज्ञान जैसे अनेक विषय शामिल हैं. ये कोर्स भी अब अपनी अलगअलग शाखाओं में विस्तार कर रहे हैं और देश के अनेक कृषि विश्वविद्यालय में इन विषयों को पढ़ाया जाता है.

खास एग्रीकल्चर कोर्स

एग्रीकल्चर कोर्सों में डिप्लोमा, स्नातक और परास्नातक डिगरी शामिल हैं. इन कोर्सों में छात्रों को कृषि और बागबानी की मूल बातें सिखाई जाती हैं. साथ ही, 'एग्रीकल्चर को व्यवसाय कैसे बनाना है' आदि भी सिखाते हैं. आधुनिक तरीके से फसलों की खेती कर के और कृषि उत्पादों की मार्केटिंग कर के भी अपना बेहतर भविष्य बना कर अच्छी आमदनी कमा सकते हैं.

विज्ञान की ही एक प्रमुख विधा कृषि विज्ञान है जिस में कृषि उत्पादन, खाद्य पदार्थों की आपूर्ति, फार्मिंग की क्वालिटी सुधारने, क्षमता बढ़ाने आदि के बारे में बताया जाता है. इस का सीधा संबंध बायोलौजिकल साइंस से है. इस में बायोलौजी, फिजिक्स, कैमिस्ट्री, मैथमैटिक्स के सिद्धांतों को शामिल करते हुए कृषि क्षेत्र की समस्याओं को हल करने का प्रयास किया जाता है.

प्रोडक्शन तकनीक को बेहतर बनाने के लिए 'रिसर्च एवं डवलपमैंट' को इस सिलेबस में शामिल किया गया है. इस की कई शाखाएं प्लांट साइंस, फूड साइंस, एनिमल साइंस व सौयल साइंस आदि हैं, जिन में स्पैशलाइजेशन कर इस क्षेत्र का जानकार बना जा सकता है.

कृषि के क्षेत्र में कैरियर बनाने के इच्छुक छात्रों को बौटनी, फिजिक्स, कैमिस्ट्री व गणित की जानकारी होना बहुत जरूरी है. ऐसे कई अंडरग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, डिप्लोमा

रोजगार के ढेरों अवसर

6 डौक्टरल कोर्स हैं, जो एग्रीकल्चर साइंस की डिगरी प्रदान करते हैं.

एग्रीकल्चर में पढ़ने के क्षेत्र

प्राकृतिक संसाधन : इस कोर्स में वानिकी (वन विज्ञान), मिट्टी और वन्यजीव से जुड़े विषयों को पढ़ाया जाता है. छात्रों को ऊर्जा स्रोतों, जैसे कि इलैक्ट्रिक मोटर्स और कंबशन इंजन और साथ ही सरकारी नियमों और कार्यक्रम, जो प्राकृतिक संसाधन संरक्षण से

संबंधित हैं आदि की जानकारी दी जाती है.

मूल बागबानी : बागबानी एक ऐसा विज्ञान है, जो पौधों की बागबानी और प्राकृतिक विकास का अध्ययन करता है. इस कोर्स में छात्रों को पौधे की वृद्धि और विकास को नियंत्रित करने का कौशल विकसित करने में मदद मिलती है. अध्ययन के विशिष्ट विषयों में पौध उत्पादन, छंटाई, पौधे की वृद्धि और भंडारण प्रक्रियाओं के नियम शामिल हैं.

जंतु विज्ञान : एग्रीकल्चर कोर्स पर फोकस करते हुए पशु विज्ञान पर भी ध्यान दे सकते हैं. इस में सभी जानवरों पर ध्यान केंद्रित करने के बारे में बताया जाता है. घोड़ों, गायों और खेती से जुड़े दूसरे जानवरों के बारे में पढ़ाई होती है.

इस कोर्स में छात्र जैविक नजरिए से पशु विकास के बारे में जान सकते हैं जैसे पशु उत्पादों, पशु आहार और पशु प्रजनन में इस के विशिष्ट विषय हैं. पशु विज्ञान पाठ्यक्रम के दौरान छात्र पशु उद्योग के इतिहास, पशु रोग और पशु पालन में वर्तमान रुझान भी सीखते हैं.

मिट्टी और कीटनाशक : कृषि के छात्रों को मिट्टी और कीटनाशकों के बारे में जानने के लिए रासायनिक प्रक्रिया और प्रभाव को समझाया जाता है कि कौन से तत्त्व फसल विकास के लिए अच्छे हैं. मिट्टी और कीटनाशक के कोर्स में पानी और मिट्टी, उर्वरक उपयोग और मिट्टी के निर्माण का संरक्षण शामिल है.

यह एक ऐसा पाठ्यक्रम है, जो व्याख्यान और प्रयोगशाला में सिखाया जाता है, ताकि छात्र इन चीजों को अच्छी तरह से समझ सकें और अपने कौशल को विकसित कर सकें.

खाद्य सिस्टम : चाहे कृषि उत्पाद में फसल या पशु भोजन, किसानों और दूसरे लोगों को उपलब्ध कराया जाए, उन्हें यूएस खाद्य प्रणाली और प्रक्रियाओं की एक मजबूत समझ की आवश्यकता है. इस कोर्स में छात्र अमेरिकी खाद्य प्रणाली का अध्ययन करते हैं, क्योंकि यह वर्तमान अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य कारकों और विनियामक कानूनों से संबंधित हैं. अध्ययन के विशिष्ट विषयों में राजनीतिक व्यवस्था, स्वास्थ्य, पर्यावरण, खाद्य खुदरा बिक्री और अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नियम शामिल हो सकते हैं.

एग्रीकल्चर सर्टिफिकेट कोर्स (अवधि 1-2 साल)

10वीं या 12वीं जमात के बाद आप एग्रीकल्चर सर्टिफिकेट कोर्स भी कर सकते हैं:

- सर्टिफिकेट इन एग्रीकल्चर साइंस
- सर्टिफिकेट इन फूड एंड बेवरीज सर्विस
- सर्टिफिकेट इन बायोफर्टिलाइजर प्रोडक्शन

एग्रीकल्चर डिप्लोमा कोर्स (अवधि 2 साल)

इस कोर्स में दाखिले के लिए साइंस, कृषि, गणित में 50 फीसदी अंकों के साथ 12वीं पास होना जरूरी है.

- डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर
- डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर एंड अलाइड प्रैक्टिस
- डिप्लोमा इन फूड प्रोसैसिंग

स्नातक कोर्स (अवधि 4 साल)

इस के बैचलर कोर्स (बीएससी इन एग्रीकल्चर) में दाखिले के लिए साइंस, कृषि, गणित के साथ 50 फीसदी अंकों के साथ 12वीं पास होना जरूरी है.

- बीटैक इन एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग
- बीटैक इन एग्रीकल्चरल इनफौर्मेशन टैक्नोलौजी
- बीटैक इन एग्रीकल्चर एंड डेरी टैक्नोलौजी
- बीटैक इन एग्रीकल्चरल एंड फूड इंजीनियरिंग

बीएससी बैचलर औफ साइंस (बीएससी):

इस के लिए 12वीं (विज्ञान, कृषि, गणित) उत्तीर्ण होना आवश्यक है.

- बीएससी इन एग्रीकल्चर
- बीएससी (औनर्स) इन एग्रीकल्चर
- बीएससी इन क्रौप साइकोलौजी

- बीएससी इन डेरी साइंस
- बीएससी इन फिशरीज साइंस
- बीएससी इन प्लांट साइंस
- बीएससी इन बागबानी
- बीएससी इन वानिकी
- बीएससी-एग्रीकल्चर जैव प्रौद्योगिकी

बीबीए इन एग्रीकल्चर मैनेजमैंट (कोर्स की अवधि 4 साल)

बीबीए (बैचलर औफ बिजनैस एडमिनिस्ट्रेशन). यह एक स्नातक स्तर का प्रबंधन कार्यक्रम है. इस कोर्स को करने के लिए 12वीं होना आवश्यक है.

परास्नातक (कोर्स अवधि 2 साल)

मास्टर डिगरी, पीजी डिप्लोमा और पीजी प्रमाणपत्र कार्यक्रम पीजी (स्नातकोतर) स्तर पाठ्यक्रम हैं. बैचलर डिगरी कोर्स पूरा करने वाले उम्मीदवार इन पाठ्यक्रमों को आगे बढ़ाने के पात्र हैं:

- एमएससी इन एग्रीकल्चर बायोलौजिकल साइंस
- एमएससी इन एग्रीकल्चर बौटनी
- एमएससी इन एग्रीकल्चर सस्य विज्ञान
- एमएससी इन एग्रीकल्चर प्लांट जैनेटिक्स
- एमएससी इन एग्रीकल्चर मृदा विज्ञान
- एमएससी इन एग्रीकल्चर कीट विज्ञान
- एमएससी इन एग्रीकल्चर कृषि अर्थशास्त्र
- एमएससी इन एग्रीकल्चर कृषि मौसम विज्ञान
- एमएससी इन एग्रीकल्चर प्लांट पैथोलौजी
- एमएससी इन एग्रीकल्चर कृषि विस्तार
- एमएससी इन एग्रीकल्चर बायोटैक्नोलौजी

- एमएससी इन एग्रीकल्चर बागबानी

डाक्टरल कोर्स (कोर्स की अवधि 3 साल या उस से ज्यादा)

पीएचडी एक शोध आधारित डाक्टरेट कार्यक्रम है. ऐसे उम्मीदवार, जिन्होंने पीजी कोर्स पूरा कर लिया है, वे इसे आगे बढ़ाने के पात्र हैं :

- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर बायोटैक्नोलौजी
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चरल एंटोमोलौजी
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर बायोलौजिकल साइंस
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर बौटनी
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर सस्य विज्ञान
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर प्लांट जैनेटिक्स
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर मृदा विज्ञान
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर कीट विज्ञान
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर कृषि अर्थशास्त्र
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर कृषि मौसम विज्ञान
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर प्लांट पैथोलौजी
- डाक्टर औफ फिलोसफी इन एग्रीकल्चर कृषि विस्तार

दलहनी के बाद खुलते रास्ते

कृषि में 12वीं के बाद कैरियर बनाने के रास्ते खुल जाते है. इस में बीएससी से ले कर पीएचडी तक के कोर्स उपलब्ध हैं. ग्रेजुएशन में प्रवेश 12वीं के बाद मिलता है. इस के बाद विभिन्न विषयों से पोस्ट ग्रेजुएशन और पीएचडी हो सकती है.

इस में दाखिला लेने के बाद विषयों पर अच्छी पकड़ होना चाहिए, क्योंकि प्रवेश एग्जाम के आधार पर अच्छी यूनिवर्सिटी या कालेज में अध्ययन के लिए दाखिला मिल सकता है.

इन सभी कोर्स को करने के लिए प्रमुख स्टेट, सैंट्रल, डीम्डटूबी एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी निम्नलिखित हैं:

केंद्रीय विश्वविद्यालय कृषि संकाय के साथ

- बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश.

- अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश.
- विश्व भारती, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल
- नागालैंड विश्वविद्यालय, मेडिजिपहर्मा, नागालैंड

डीम्डटूबी यूनिवर्सिटीज

- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली-110012
- भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली-243122, उत्तर प्रदेश
- राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल-132001, हरियाणा
- केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, मुंबई-400061, महाराष्ट्र

राज्यवार कृषि विश्वविद्यालय

आंध्र प्रदेश

- आचार्य एनजी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, गुंटूर
- डा. वाईएसआर होर्टिकल्चर यूनिवर्सिटी
- श्री वेंकटेश्वर पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरुपति

असम

- असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट

बिहार

- बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर
- बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

छत्तीसगढ़

- इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर
- छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग

गुजरात

- सरदार कृषिनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, दांतीवाड़ा
- आनंद कृषि विश्वविद्यालय, आनंद
- नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी
- जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़
- कामधेनु विश्वविद्यालय, गांधीनगर

हरियाणा

- चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
- लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार
- हरियाणा राज्य बागबानी विज्ञान संस्थान, करनाल

हिमाचल प्रदेश

- चौ. सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
- डा. यशवंत सिंह परमार बागबानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन

झारखंड

- बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची

जम्मू और कश्मीर

- शेर ए कश्मीर कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- शेर ए कश्मीर कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू

कर्नाटक

- कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बैंगलुरु
- कर्नाटक पशु चिकित्सा, पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, बीदर
- कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, रायचूर
- कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़
- बागबानी विज्ञान विश्वविद्यालय, बगलकोट
- कृषि और बागबानी विज्ञान विश्वविद्यालय, शिमोगा

केरल

- केरल कृषि विश्वविद्यालय, त्रिशूर
- केरल यूनिवर्सिटी औफ फिशरीज ऐंड ओशन स्टडीज, पनांगड, कोच्चि
- केरल पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पूकोड, वायानंद, केरल

मध्य प्रदेश

- राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर
- नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, जबलपुर
- जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

महाराष्ट्र

- डाक्टर बालासाहिब सावंत कोकन कृषि विद्यापीठ, दापोली
- महाराष्ट्र पशु और मत्स्य पालन विज्ञान विश्वविद्यालय, नागपुर
- वसंतराव नायक मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ, परभणी
- माततम फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी
- डाक्टर पंजाबराव देशमुख कृषि विद्या विद्यालय, अकोला

ओडिशा

- ओडिशा कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर

पंजाब

- गुरु अंगद देव वैटरनरी ऐंड एनिमल साइंसेज यूनिवर्सिटी, लुधियाना
- पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना

राजस्थान

- महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
- स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
- राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर
- एसकेएन कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
- कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

- कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

तमिलनाडु

- तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर
- तमिलनाडु पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, चेन्नई
- तमिलनाडु मत्स्य विश्वविद्यालय, नागपट्टिनम

तेलंगाना

- श्री कोंडा लक्ष्मण तेलंगाना राज्य बागबानी विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- श्री पीवी नरसिम्हा राव तेलंगाना पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- प्रोफैसर जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद

उत्तराखंड

- जीबी पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर
- वीसीएसजी उत्तराखंड बागबानी और वानिकी विश्वविद्यालय, भरसार

उत्तर प्रदेश

- चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर
- नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, फैजाबाद
- सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवंम प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ
- पं. दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान, मथुरा.
- बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बांदा
- सैम हिगिनबौटम कृषि विश्वविद्यालय, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान, इलाहाबाद

पश्चिम बंगाल

- विधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, मोहनपुर
- पश्चिम बंगाल पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, कोलकाता
- उत्तर बंगा कृषि विश्वविद्यालय, कूचबिहार

कृषि क्षेत्र में रोजगार

मैनेजमैंट में पीजी डिप्लोमा इन एग्री वाटर मैनेजमैंट कृषि विज्ञान के क्षेत्र में प्रोफैशनल्स का वेतन उन की योग्यता, संस्थान और काम करने के अनुभव पर निर्भर करता है.

सरकारी क्षेत्र में कदम रखने वाले ग्रेजुएट प्रोफैशनल्स को प्रारंभ में 20-25 हजार प्रति माह मिलते हैं. कुछ साल के अनुभव के बाद यह राशि 40-50 हजार प्रतिमाह हो जाती है, जबकि प्राइवेट सैक्टर में प्रोफैशनल्स की स्किल्स के हिसाब से वेतन दिया जाता है.

यदि आप अपना फर्म या कंसल्टैंसी सर्विस खोलते हैं, तो आमदनी की रूपरेखा, फर्म के आकार व स्वरूप पर निर्भर करती है. टीचिंग व रिसर्च के क्षेत्र में भी अच्छी तनख्वाह मिलती है. कृषि विज्ञान में डिगरी/डिप्लोमा कोर्स करने के बाद निम्नलिखित पदों पर नियुक्ति हो सकती हैं:

- एग्रीकल्चर ऐक्सटैंशन औफिसर
- रूरल डवलपमैंट औफिसर
- फील्ड औफिसर
- एग्रीकल्चर क्रेडिट औफिसर
- एग्रीकल्चर प्रोबेशनरी औफिसर

- प्लांट प्रोटैक्शन औफिसर
- सीड प्रोडक्शन औफिसर
- प्लांट पैथोलौजिस्ट
- एग्रीकल्चर असिस्टैंट/ टैक्निकल असिस्टेंट

इन सभी कोर्सों में दाखिला प्रवेश प्रक्रिया के बाद मिलता है. प्रवेश परीक्षाएं संबंधित संस्थान, यूनिवर्सिटी अथवा इंडियन काउंसिल औफ एग्रीकल्चरल रिसर्च (आईसीएआर), नई दिल्ली द्वारा कराई जाती हैं.

आईसीएआर से मान्यताप्राप्त संस्थान आईसीएआर के अंक को आधार बना कर प्रवेश देते हैं. आईसीएआर पोस्ट ग्रेजुएट के लिए फैलोशिप भी प्रदान करता है.

प्रवेश लेने का समय

बीएससी, एमएससी, पीएचडी, जैसे कोर्सों में सामान्य तौर पर दाखिले से संबंधित नोटिफिकेशन प्रत्येक साल के फरवरी से मार्च माह के बीच तक आ जाता है और इन की परीक्षा मई माह से जून माह के बीच करवाई जाती है. जुलाई माह के अंत तक दाखिले की प्रक्रिया चलती रहती है.

ध्यान देने योग्य बातें

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा अनुमोदित कालेज में अध्ययन करना बेहतर है. इस के अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा मान्यता न प्राप्त करने वाले गैर एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी या कालेज से बीएससी एग्रीकल्चर के छात्र एमएससी पीएचडी में प्रवेश लेने के अलावा कृषि अधिकारी (एओ) जैसी सरकारी नौकरियों के लिए पात्र नहीं होते हैं.

सरकार ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा अनुमोदित यूनिवर्सिटी और कालेज से शिक्षा लिए छात्र ही केवल भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे जूनियर रिसर्च फैलो, एमएससी के लिए सीनियर रिसर्च फैलो, पीएचडी में एडमिशन ले पाएंगे, इसलिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा अनुमोदित यूनिवर्सिटी व कालेज से ही कृषि संबंधी शिक्षा लेना बेहतर है. ■

फूड प्रौसेसिंग से सुनहरा भविष्य

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सहित देश की तमाम कृषि शोध संस्थाएं कृषि उत्पादकता बढ़ाने वाली तकनीकों और फसलों की ज्यादा उपज देने वाली प्रजातियां विकसित करने में जुटी हैं. निजी क्षेत्र की कई कंपनियां कृषि उत्पादों का ज्यादा समय तक उपभोग सुनिश्चित करने के लिए बड़े पैमाने पर फूड प्रोसैसिंग शुरू कर चुकी हैं. डब्बाबंद जूस, आइसक्रीम, दुग्ध उत्पाद और चिप्स जैसे उत्पाद फूड प्रोसैसिंग के उदाहरण हैं. इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कृषि विज्ञान में कैरियर बनाने के अच्छे विकल्प मौजूद हैं.

हरियाणा सरकार की पहल

किसानों के लिए खुला 'मेरी फसल मेरा ब्योरा' पोर्टल

चंडीगढ़ : हरियाणा सरकार ने गेहूं की खरीद के लिए किसानों का 'मेरी फसल मेरा ब्योरा' पोर्टल पर पंजीकरण शुरू करवा दिया है.

उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के अनुसार, सरसों की खरीद 15 अप्रैल, तो गेहूं की खरीद 20 अप्रैल तक होगी. इस के लिए किसान 19 अप्रैल तक पोर्टल पर पंजीकरण करा सकते हैं.

उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के पास खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता विभाग भी है. उन्होंने यहां खरीद प्रबंधों की समीक्षा के लिए बुलाई गई एक बैठक की अध्यक्षता की.

बैठक में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री जेपी दलाल और आढ़ती एसोसिएशन के पदाधिकारी वीडियो कौंफ्रेंसिंग के माध्यम से शामिल हुए.

इस बैठक में जानकारी दी गई कि सरसों की खरीद के लिए 140 मंडियां, जबकि गेहूं की खरीद के लिए लगभग 2,000 मंडी, उपमंडी व खरीद केंद्र निर्धारित किए गए हैं. किसानों को बारदाने की कोई कमी नहीं रहने दी जाएगी. इस बार प्रतिदिन 1.5 लाख मीट्रिक टन गेहूं की खरीद करने का प्रस्ताव है.

किसानों को सरसों व गेहूं की खरीद के लिए 'मेरी फसल मेरा ब्योरा' पोर्टल के आधार पर दी गई जानकारी के अनुसार कूपन दिए जाएंगे, ताकि मंडियों में किसान एकसाथ उपज ले कर न आएं और निर्धारित तिथि के अनुसार ही विशेष गांवों के किसान क्रमवार अपनी उपज मंडियों में ले कर आएं.

बैठक में यह भी फैसला लिया गया है कि जिन किसानों ने 'मेरी फसल मेरा ब्योरा' पोर्टल पर पंजीकरण करवाया है, उन की उपज की खरीद प्राथमिकता के आधार पर की जाएगी.

बता दें कि अब तक तकरीबन 60 फीसदी

किसानों ने गेहूं की फसल का पंजीकरण करवाया है, जबकि 40 फीसदी किसानों ने पंजीकरण नहीं करवाया है.

बैठक में आढ़ती एसोसिएशन ने आश्वासन दिया कि वे अपनी 2.5 फीसदी आढ़त में से 0.10 फीसदी राशि 'हरियाणा कोरोना रिलीफ फंड' में सहयोग के रूप में देंगे.

बैठक में इस बात का भी फैसला लिया गया है कि देरी से गेहूं की खरीद होने के कारण केंद्र सरकार जो भी दिशानिर्देश देगी, उसी के अनुरूप किसानों को बोनस या प्रोत्साहन राशि दी जाएगी. इस बार गेहूं की खरीद जून माह तक चलने की संभावना है.

वहीं इनेलो के नेता अभय चौटाला ने राज्य सरकार के 15 अप्रैल से सरसों और 20 अप्रैल से गेहूं की फसल खरीदने संबंधी बयान पर कहा कि सरसों के किसान तो अपनी फसल को समर्थन मूल्य से कम दाम पर देने को मजबूर हो रहे हैं.

उन्होंने यह भी कहा कि मेवात इलाके में सरसों की फसल की आवक तो फरवरी माह के आखिरी हफ्ते में मंडियों में आनी शुरू हो जाती है. रेवाड़ी व नारनौल में मार्च माह के दौरान तैयार हो जाती है. अब इस इलाके के किसान सीधे कारखानों में समर्थन मूल्य से कम दाम पर सरसों बेचने पर मजबूर हैं.

उन्होंने यह भी कहा कि गेहूं की खरीद 20 अप्रैल से पहले शुरू की जाए तो किसानों को भंडारण की व्यवस्था से छुटकारा मिल सकता है. सरकार 4 या 5 गांवों के ग्रुप बना कर सरसों व गेहूं की खरीद शुरू कर सकती है.

इस से खरीद एजेंसी के अधिकारियों को भी सुविधा होगी. किसानों को भी सहूलियत होगी. अभी तक खरीद के बारे में मंडियों में खरीद एजेंसियों द्वारा प्रबंध न के बराबर हैं. अभी तक तो यह भी सुनिश्चित नहीं है कि कौन सी एजेंसी किस मंडी में कितना गेहूं व सरसों की खरीद का लक्ष्य निर्धारित किया है. ■

योगी सरकार का फैसला : खेतों में होगी मुफ्त जुताई और बोआई

लखनऊ : उत्तर प्रदेश के लघु और सीमांत किसानों को राहत देने के लिए योगी सरकार ने ट्रैक्टरों से मुफ्त में खेतों की जुताई और बोआई कराने का निर्णय लिया है.

पहले चरण में यह योजना उत्तर प्रदेश के लखनऊ, वाराणसी और गोरखपुर समेत 16 जिलों में लागू की जा रही है. किसानों को 2 महीने ही मुफ्त में जुताई और बोआई की यह सुविधा मिलेगी.

यह मौसम खेत से गेहूं और तिलहन जैसी फसलों की कटाई का है, पर किसान खेतों की फसल कटाई और बोआई की तैयारी नहीं कर पा रहे हैं.

राज्य के कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही के मुताबिक, प्रदेश के छोटे किसानों की लागत कम करने के लिए निजी कंपनियों की मदद ली जा रही है.

उन्होंने ट्वीट किया कि मैसी टैफे कंपनी के सहयोग से लघु व सीमांत किसानों को आगामी 2 माह तक फसल कटाई, खेतों की जुताई व बोआई मुफ्त में मुहैया कराई जाएगी.

प्रदेश सरकार द्वारा प्रथम चरण में 16 जिलों को चुना गया था. वहीं, दूसरे चरण में बहराइच, बलरामपुर, देवरिया वगैरह जिलों के छोटे किसानों को सुविधा मुहैया कराने की योजना है.

राज्य सरकार ने किसानों की

तिलहन और दलहन फसल की उपज का उचित मूल्य दिलाने का भी आश्वासन दिया है. इस के तहत सरसों, चना और मसूर की सरकारी खरीद भी कराई जाएगी. ■

सहायता

किसानों को घर बैठे मिल जाएगी मदद

नई दिल्ली : कोरोना वायरस (कोविड-19) लौकडाउन के दौरान घर से बाहर न निकल पाने की वजह से किसान खासा परेशान हैं. न तो कृषि अधिकारी के वहां जा पा रहे हैं और न तो कृषि विज्ञान केंद. लेकिन फसलों की कटाई, बोआई तो समय पर ही करनी होगी, ऐसे में उन के लिए किसान कौल सैंटर (केसीसी-किसान काल सैंटर) बड़ा मददगार बन कर उभरा है. ऐसे कठिन वक्त में किसानों के सहयोग के लिए कृषि मंत्रालय ने किसान काल सैंटर चालू रखा है. काल सैंटर के नंबर को कृषि वैज्ञानिकों के पर्सनल मोबाइल पर डायवर्ट कर दिया गया है ताकि किसानों को वे घर बैठे ही सलाह देते रहें.

केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के मुताबिक, इस समय रोजाना तकरीबन 20 हजार किसान फोन कर के खेती के लिए वैज्ञानिक सलाह ले रहे हैं.

फिर आप क्यों पीछे हैं. आप को खेतीकिसानी में कोई समस्या आ रही है तो चिंता करने की जरूरत नहीं. देश में 21 किसान काल सैंटर हैं. किसी को भी बंद नहीं किया गया है. सब में सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक आप फोन कर के अपनी खेती से जुड़ी समस्याओं का समाधान पा सकते हैं. फार्म टेली एडवाइजर आप का सवाल सुन कर उस का जवाब देगा. इस के लिए 1800-180-1551 पर फोन करना होगा. यह नंबर लैंडलाइन या मोबाइल दोनों से मिल जाएगा.

किसान काल सैंटर में करीब सवा सौ कृषि विशेषज्ञ काल रिसीव करते हैं और समस्याओं का समाधान करते हैं. ये ऐक्टपर्ट बागबानी, पशुपालन, मत्स्यपालन, कुक्कुट, मधुमक्खीपालन, रेशम उत्पादन, एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग, एग्रीकल्चर बिजनैस, जैव प्रौद्योगिकी, गृह विज्ञान में स्नातक, पीजी और डाक्टरेट हैं. आमतौर पर अगर काल तुरंत रिसीव नहीं होती है तो किसान को बाद में किसान काल सैंटर से काल की जाती है. किसान काल सैंटर में रजिस्ट्रेशन करने पर किसानों को टैक्स्ट मैसेज या वाइस मैसेज भी भेजा जाता है.

मोबाइल पर जानकारी पाने के लिए रजिस्ट्रेशन-किसान 51969 या 7738299899 पर एक एसएमएस

भेज कर रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं. रजिस्ट्रेशन ऐसे करें:

मैसेज बाक्स में ये टाइप करें: किसान gov reg <name> <state name> <district name> संदेश लिखने के बाद 51969 या 7738299899 पर भेज दें.

इंटरनेट के जानकार किसानों के लिए वैब रजिस्ट्रेशन: वह किसान, जिन के पास इंटरनैट की सुविधा है, वो पोर्टल के माध्यम से रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं अथवा पास के कस्टमर सर्विस सैंटर (सीएससी) में जा कर रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं. वैब रजिस्ट्रेशन के लिए http://mkisan.gov.in/hindi/wbreg.aspx पर क्लिक करें. ■

नाराजगी

तौल न होने से किसान नाराज

मुजफ्फरनगर : कसबे में उत्तम शुगर मिल खाईखेड़ी के गन्ना क्रय केंद्र पर 4 दिनों से तौल न होने व इंडेंट जारी न होने से नाराज किसानों ने गन्ना क्रय केंद्र पर जम कर हंगामा किया.

कसबा छपार में गन्ना क्रय केंद्र पर एकत्र किसानों ने हंगामा करते हुए उत्पीड़न करने का आरोप लगाया.

एक किसान ने बताया कि 4 दिनों से कसबे में गन्ना का तौल और इंडेंट जारी नहीं हुआ है. किसानों के खेतों में अभी तक आधे से अधिक गन्ने की फसल खड़ी हुई है. गन्ने की छिलाई न होने के कारण पशुओं के चारे की समस्या भी उत्पन्न हो रही है.

आला अधिकारियों से शिकायत करने के बाद भी कोई सुनवाई नहीं हुई.

घंटों चले हंगामे के बाद किसानों के बीच पहुंचे उत्तम शुगर मिल खाईखेडी के डीजीएम साईम अंसार ने प्रतिदिन 1600 क्विंटल इंडेट जारी करने और क्रय केंद्रों पर तौल होने के आश्वासन दे कर किसानों को शांत किया. ■

पहल

लुपिन की पहल : विश्व स्वास्थ्य दिवस पर हुए सम्मानित

भरतपुर : विश्व स्वास्थ्य दिवस पर कोरोना संक्रमण की रोकथाम में लगे चिकित्सकों, नर्सिंगकर्मियों और सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया गया.

इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में पुलिस अधीक्षक हैदरअली जैदी और विशिष्ट अतिथि के रूप में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डाक्टर मूल सिंह राणा मौजूद थे. अध्यक्षता लुपिन के अधिशाषी निदेशक सीताराम गुप्ता ने की थी.

कोरोना की रोकथाम में लगे लोगों को सब से पहले आरबीएम चिकित्सालय में फूलमाला पहना कर सम्मानित किया गया, जहां प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डाक्टर नवदीप सैनी सहित सभी चिकित्सकों, नर्सिंगकर्मियों, सफाई कर्मचारियों और सुरक्षागार्डों को सम्मानित किया गया, जिन्हें फल व साफी भेंट की गई.

कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक हैदरअली जैदी ने कहा कि अपनी जान हथेली पर रख कर कोरोना वायरस की रोकथाम में लगे चिकित्साकर्मियों सहित तमाम लोग सम्मान के योग्य हैं. लुपिन ने इन लोगों को सम्मानित करने का नवाचार शुरू किया है, निश्चय ही सराहनीय है.

लुपिन के अधिशाषी निदेशक सीताराम गुप्ता ने कहा कि वे इस महामारी की रोकथाम में सहयोग देने की लगातार कोशिश कर रहे हैं, जिस के लिए गरीब लोगों को खाद्यान्न व भोजन की व्यवस्था के अलावा चिकित्सालय में जरूरी चीजें भी मुहैया कराई गई हैं.

इस के बाद मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय में भी इन लोगों को सम्मानित किया गया. मुख्य चिकित्सा और स्वास्थ्य अधिकारी डाक्टर कप्तान सिंह सहित सभी को सम्मान दे कर नवाजा गया. बाद में नगरनिगम में सफाई का काम करने वाले और दूसरे कर्मचारियों को भी फल दे कर सम्मानित किया गया.

इस मौके पर लुपिन के क्षेत्रीय कार्यक्रम प्रबंधक डाक्टर राजेश शर्मा, भीम सिंह, पुनीत गुप्ता, पुनीत वर्मा, शालो हेम्ब्रोम, राजेंद्र माहुरे वगैरह मौजूद थे. ■

अव्यवस्था

गन्ना किसान हो रहे परेशान

बिजनौर : उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले की चीनी मिल गन्ने की पैदावार कम होने के बाद भी कम पेराई कर रही हैं. किसानों के खेतों में अब भी गन्ना खड़ा है.

नोटिस जारी होने के बाद भी चीनी मिल क्षमता के अनुसार पेराई नहीं कर रही हैं. इस से पेराई सत्र पूरे अप्रैल माह तक चलने का अनुमान है.

जिले के किसानों की प्रमुख फसल गन्ना है. जिले की खेती के

कुल रकबे से आधी जमीन करीब 2 लाख,10 हजार हेक्टेयर में केवल गन्ने की फसल बोई जाती है.

गन्ना पैदा करने में किसान कोई कसर नहीं छोड़ते हैं. पेराई सत्र 2017-18 में जिले की चीनी मिलों में गन्ना उत्पादन 10 करोड़ क्विंटल से भी अधिक हुआ था.

जिले की चीनी मिलों में चीनी रिकवरी 13 फीसदी से भी ऊपर पहुंच गई थी. जिले में गन्ना उत्पादन बंपर होने से किसानों की आमदनी में बढ़ोतरी हुई थी. किसानों ने पिछले साल गन्ने का रकबा बढ़ा दिया था. रकबा बढ़ने के बाद भी इस बार गन्ने की पैदावार कम हुई है.

वजह, बेमौसम बारिश और ओला पड़ने से गन्ने की पैदावार प्रभावित हुई है. गन्ने की पैदावार कम होने के बाद भी चीनी मिलें पेराई समय से नहीं कर पा रही हैं.

यह हाल तब है, जब पिछले साल के मुकाबले चीनी मिलों ने पेराई सीजन देरी से शुरू किया था. पिछले साल की पेराई के मुकाबले इस साल गन्ने की पेराई बहुत कम होने की उम्मीद है. ■

मुसीबत

गन्ना किसानों पर दोहरी मार

शामली : पहले ही गन्ना भुगतान न होने से किसान परेशान हैं, वहीं उन की समस्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है.

एक तरफ तो गन्ना कटाई के लिए मजदूर कम मिल रहे हैं, वहीं परचियों का भी संकट है. गेहूं की फसल पक कर तैयार है और जल्द कटाई भी शुरू होनी है. ऐसे में किसान चिंतित हैं कि अगर ऐसा ही चलता रहा तो गन्ने की कटाई करेंगे या गेहूं की.

गन्ना वभाग ने परचियों की छपाई बंद कर दी है. किसानों को पहले ही परचियों की दिक्कत रहती थी, लेकिन अब और अधिक है. व्यवस्था एसएमएस परची भेजने की है, लेकिन काफी किसानों के पास अभी तक एसएमएस नहीं पहुंचा है.

एक और किसान का कहना है कि गेहूं की कटाई में लग जाएंगे तो

गन्ना नहीं डाल पाएंगे. गन्ना डालने जाएंगे तो गेहूं की कटाई का काम प्रभावित होगा.

वहीं उस किसान का यह कहना कि एक तो गन्ने का भुगतान नहीं हो रहा है, वहीं गन्ने की फसल के साथ गेहूं की फसल भी तैयार है और मजदूर कम मिल रहे हैं.

विजय बहादुर सिंह, जिला गन्ना अधिकारी का कहना है कि अभी तो पर्चियों की छपाई बंद है. किसानों को एसएमएस भेजे जा रहे हैं. अगर किसी को समस्या है तो संबंधित समिति के सचिव से मिल लें. सरकार ने चीनी मिलों को चलाने को इसलिए कहा है, जिस से किसानों को परेशानी न हो. ■

सहूलियत

कंबाइन मशीन में 3 आदमी और भी

ऊधमसिंह नगर : जिले में गेहूं की फसल पक चुकी है, लेकिन गेहूं कटाई के लिए मजदूर नहीं मिल पा रहे हैं. ऐसे में जिला प्रशासन व कृषि विभाग ने किसानों को राहत देते हुए कंबाइन मशीन से गेहूं कटाई की छूट दी है.

गेहूं कटाई के दौरान कंबाइन मशीन में चालक के अलावा 3 और काम करने वाले मौजूद रहेंगे. खेती के काम करने के बाद कंबाइन मशीन व काम करने वाले मजदूरों को सैनिटाइज किया जाएगा.

ऊधमसिंह नगर में तकरीबन एक लाख हेक्टेयर खेती की जमीन में गेहूं बोया गया है. लेकिन गेहूं की काटने के लिए मजदूर ही नहीं मिल पा रहे हैं. जिला प्रशासन व कृषि विभाग ने किसानों को गेहूं काटने के लिए कंबाइन मशीन चलाने की अनुमति दी है. ■

मिसाल

पीड़ितों का सहारा बना 'सत्यपुर क्लब' 11,000 मास्क बना कर कलक्टर को सौंपे

सांचौर : राजस्थान के जालोर जिले के सांचोर का नाम यहां के एक प्रगतिशील किसान योगेश जोशी की वजह से अंतर्राष्ट्रीय लेवल पर चमका. उन्होंने जैविक खेती में 3,000 किसानों को जोड़ कर खेती की एक नई इबारत लिखी. आज इन किसानों की उपज अमेरिका और जापान तक जाती है.

योगेश जोशी ने अपने कुछ दोस्तों के साथ मिल कर 'सत्यपुर क्लब' नाम से एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया, जो आपदा में फंसे लोगों की मदद करने में बढ़चढ़ कर आगे आता रहा है.

इस समय जब देशदुनिया कोरोना की महामारी से जूझ रहा है, ऐसे में इन नौजवानों ने अपने जिले में बांटने के लिए कपड़े के 11,000 मास्क बना कर जिला कलक्टर को सौंपे. इस में से 6,000 मास्क जिला लेवल पर और 5,000 उपखंड मुख्यालय लेवल पर बांटे गए.

सोशल मीडिया पर आजकल ज्यादातर नौजवान समय बिताते हुए देखे जा सकते हैं, लेकिन सांचौर के कुछ नौजवानों ने पिछले कुछ सालों में सोशल मीडिया के जरीए सामाजिक सरोकार की भूमिका निभाई है, जो औरों के लिए भी प्रेरणा देने वाली है.

'सत्यपुर क्लब' नामक व्हाट्सएप ग्रुप ने पिछले 4 सालों में कई सामाजिक काम किए हैं और कई

परिवारों को माली मदद और राशन सामग्री बांटी है.

शहरी ही नहीं, बल्कि इलाके की विभिन्न गतिविधियों से जुड़े रहने के लिए तमाम प्रशासन अधिकारी भी इस व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़े कर सामाजिक सेवा में बेहतर काम को अंजाम दे रहे हैं. ग्रुप में शहर के विकास से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होने से प्रशासनिक अधिकारी भी लोगों की समस्या सुलझा रहे हैं.

बीते सालों में सांचौर में बाढ़ ने बड़ी तबाही मचाई थी, सारा सांचौर डूब चुका था. उस मौके पर प्रशासन के साथ सहयोग कर के 'सत्यपुर क्लब' ने बाढ़ पीड़ितों को राशन का सामान, फूड पैकेट और रहने की व्यवस्था करवाई थी. ■

-मोईनुद्दीन चिश्ती

ईजाद

अंगूर की नई किस्म है खास

पुणे : देश में गरमियों के मौसम की शुरुआत के बीच पुणे के विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान ने रस से भरपूर अगूंर की नई किस्म विकसित की है. पुणे के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के स्वायत्त संस्थान आघारकर अनुसंधान संस्थान की ओर से विकसित अंगूर की यह किस्म फफूंद रोधी होने के साथ ही अधिक पैदावार वाली और रस से भरपूर है. यह जूस, जैम और रैड वाइन बनाने में बेहद उपयोगी है.

अंगूर की यह संकर प्रजाति एआरआई-516 दो विभिन्न किस्मों अमरीकी काटाबाबा तथा बिटिस विनिफेरा को मिला कर विकसित की गई है. यह बीज रहित होने के साथ ही फफूंद के रोग से सुरक्षित है.

अंगूर की रस से भरपूर और अच्छी पैदावार देने वाली यह किस्म महाराष्ट्र एसोसिएशन फौर कल्टीवेशन साइंस (एमएसी)-एआरआई की कृषि वैज्ञानिक डाक्टर सुजाता तेताली की ओर से विकसित की गई है. यह किस्म 110-120 दिन में पक कर तैयार हो जाती है और घने गुच्छेदार होती है. महाराष्ट्र, तेलंगाना, तमिलनाडु, पंजाब और पश्चिम बंगाल की जलवायु इस की खेती के लिए अनुकूल है.

एमएसीएसएआरआई फलों पर अनुसंधान के अखिल भारतीय कार्यक्रम के तहत भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के साथ जुड़ा है. इस कार्यक्रम के तहत उस ने अंगूर की कई संकर किस्में विकसित की हैं. ये किस्में रोग रोधी होने के साथ ही बीज रहित और बीज वाली दोनों तरह की हैं.

अंगूर उत्पाद के मामले में भारत का दुनिया में 12वां स्थान है. देश में अंगूर के कुल उत्पादन का 78 फीसदी सीधे खाने में इस्तेमाल हो जाता है, जबकि 17-20 फीसदी का किशमिश बनाने में, डेढ़ प्रतिशत का शराब बनाने में और 0.5 फीसदी का इस्तेमाल जूस बनाने में होता है. देश में अंगूर की 81.22 फीसदी खेती अकेले महाराष्ट्र में होती है. यहां अंगूर की जो किस्में उगाई जाती हैं, वे ज्यादातर रोग रोधी और गुणवत्ता के लिहाज से भी उत्तम हैं. ■

सलाह

मूंग की बिजाई

लखनऊ : कानपुर स्थिति चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दलहन वैज्ञानिक डाक्टर मनोज कटियार ने ग्रीष्मकालीन मूंग की बोवाई के लिए किसानों को एडवाइजरी जारी की. उन्होंने कहा कि मूंग की बोवाई समय से अवश्य कर लें.

उत्तर प्रदेश में ग्रीष्मकालीन में लगभग 42,000 हेक्टेयर में मूंग बोई जाती है, जिस में कानपुर मंडल में

लगभग 10829 हेक्टेयर है. ग्रीष्मकालीन मूंग में सब से महत्त्वपूर्ण जल प्रबंधन और सिंचाई व्यवस्था होती है. किसान भाई मूंग की फसल में पहली सिंचाई बोआई के 20 दिन पर करें.

तापमान बढ़ने पर जरूरत के मुताबिक पहली सिंचाई कर सकते हैं. जरूरत के मुताबिक 10-12 दिनों बाद सिंचाई जरूर करें. गरमी की मूंग फसल में कुल 3-4 सिंचाई की जरूरत होती है.

याद रखें कि शाम के समय जब हवा न चल रही हो तब सिंचाई करें. गरमी में मूंग 60-65 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है.

विश्वविद्यालय के डाक्टर खलील खान ने कहा कि मूंग की कटाई की अपेक्षा फलियों की तुड़ाई करना हितकारी होगा, क्योंकि फली तोड़ने के बाद फसल को खेत में ही रोटावेटर की सहायता से पलटने पर हरी खाद का काम करेगी और मिट्टी की उपजाऊ कूवत में बढ़ोत्तरी होगी.

उन्होंने सलाह दी है कि खेती करते समय सामाजिक दूरी बनाए रखें और हाथों को बारबार साबुन से साफ करते रहें. ■

मशवरा

लगाएं चारा फसल ग्वार

जौनपुर (भदोही) : गरमी का मौसम शुरू हो चुका है. धीरेधीरे तापमान बढ़ने लगा है. इस से सूखनी शुरू हो चुकी घासों आदि के चलते हरियाली भी गायब होने लगी है. ऐसे में गरमी के इस मौसम में मवेशियों के लिए पौष्टिक व हरा चारा सुनिश्चित करना भी किसानों और पशुपालकों के लिए किसी चुनौती से कम नहीं होगा.

ऐसे समय में ग्वार की बोआई कर इस संकट से नजात पाया जा सकता है. बोआई के लिए सही समय भी चल रहा है.

कृषि विज्ञान केंद्र बेजवां के कृषि वैज्ञानिक डा. आरपी चौधरी ने बताया कि पशु चारे के लिए बहु कटाई वाली प्रमुख प्रजातियों में मीठी सूडान, एसएसजी 59-3, एमपी चरी, पूसा चरी-23, जवाहर चरी-6 आदि प्रजाति के बीज की बोआई करना लाभकारी होगा.

कैसे करें उर्वरक प्रबंधन : बहु कटाई वाले प्रजाति के फसल की बोआई के लिए 30 किलोग्राम और एक कटाई वाले प्रजाति के बीज की बोआई के लिए 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बीज का प्रयोग किया जा सकता है. बोआई के पूर्व 2.5 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज का शोधन करना लाभकारी होगा.

इस के साथ ही बोआई के पहले 150 क्विंटल गोबर की सड़ी ाद खेत में मिला दें. एक कटाई वाली फसल की बोआई के समय 80 किलोग्राम डीएपी और 50 किलोग्राम यूरिया का प्रयोग प्रति हेक्टेयर बोआई के समय करना चाहिए. 50 किलोग्राम यूरिया एक माह के बाद छिड़काव के रूप में करना चाहिए.

बहु कटाई वाली प्रजातियों के पशु चारे की बोआई के समय 80 किलोग्राम डीएपी, 60 किलोग्राम यूरिया छिड़कें. एक माह बाद पहली कटाई के उपरांत 60 किलोग्राम छिड़कें. इस से चारे की गुणवत्ता बनी रह सकती है. ■

अपनी राय भेजें

फार्म एन फूड के बारे में आप की राय का स्वागत है. आप अपने विचारों के साथ किसी भी तरह की जानकारी, खेती और उस के कारोबार, उपज, खोज, सुविधा, मशीन, बाजार आदि से जुड़े लेख, सुझाव, फोटोग्राफ हमें मोबाइल नंबर 8447177778 पर ह्वाट्सएप करें या ईमेल farmnfood@delhipress.in पर भेजें.

चुनिंदा सामग्री को प्रकाशित किया जा सकता है.

डर

काजू पर मंडराता खतरा

बैंगलुरु : कोरोना वायरस का प्रसार रोकने के लिए घोषित लौकडाउन के कारण राज्य के दक्षिण कन्नड़, उडुपी, उत्तर कन्नड़ और शिवमोग्गा जिले में काजू की फसल की कटाई रुकी हुई है. इस के अलावा प्रसंस्करण इकाइयों और खुदरा बाजारों के बंद होने से कच्चे काजू के मूल्य में भारी गिरावट दर्ज की गई है.

वर्तमान में कच्चे काजू का भाव पिछले फसल सीजन की तुलना में 45 फीसदी गिर कर 125 रुपए प्रति किलोग्राम से 70 रुपए प्रति किलोग्राम तक आ गई है.

लौकडाउन जारी रहने के भय से काजू उत्पादक किसान अपनी उपज कम कीमत पर बेचने के लिए मजबूर हो रहे हैं. केरल के बाद कच्चे काजू का दूसरा सब से बड़ा उत्पादक कर्नाटक ही है, जहां राष्ट्रीय उत्पादन का लगभग 15 फीसदी काजू होता है.

देश में सालाना लगभग 5.5 लाख टन काजू उत्पादित होता है. इस में से लगभग 75 हजार टन उत्पादन कर्नाटक में होता है. यहां लगभग 300 प्रसंस्करण इकाइयां हैं, जिस में 50 हजार से अधिक कामगार हैं. इन में ज्यादातर औरतें होती हैं, जिन्हें 400 रुपए दैनिक मजदूरी मिलती है.

काजू उद्योग से जुड़े एक कारोबारी ने बताया कि पिछले 2 सप्ताह से कारोबार बुरी तरह प्रभावित हुआ है. काजू उद्योग के लिए यह फसल कटाई का समय है, लेकिन मजदूरों की कमी के कारण उद्योग और किसान दोनों के

कामकाज ठप पड़े हैं. काजू के जो फल झड़ गए हैं, उन को ले कर अधिक खतरा है, जिन फसलों की कटाई हो चुकी है, उन्हें प्रसंस्करण इकाइयों तक पहुंचाना मुश्किल है, क्योंकि लौकडाउन के कारण वाहनों की आवाजाही प्रतिबंधित है.

इस बीच कृषि विभाग के सचिव से एक एडवाजरी जारी करने को कहा गया है कि किसान घबरा कर कम कीमत पर अपनी उपज नहीं बेचें. अगर किसान अपनी फसलों को अच्छी तरह सुखा कर रखेंगे, तो कोई समस्या नहीं होगी. ■

सलाह

खूब खाओ, अंडेचिकन

पटना : कोराना वायरस की वजह से लगे लौकडाउन के कारण बिहार में मछली, मटन चिकन और अंडा खाने वालों की परेशानी बढ़ गई थी. लेकिन अब उन के लिए खुशखबरी है.

बिहार सरकार के पशुपालन विभाग ने राज्य में मांस और मछली दुकानों से पाबंदी हटा दी है और कहा है कि सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कर इसे खरीदा और बेचा जा सकता है. कृषि विभाग ने बाकायदा प्रेस कौंफ्रेंस कर कहा कि मांसाहार का सेवन कीजिए, कोराना और बर्ड फ्लू की वजह से डरने की कोई जरूरत नहीं है.

बिहार सरकार के कृषि विभाग के सचिव एन सरवण ने प्रेस कौंफ्रेंस में बताया कि कृषि और पशुपालन क्षेत्र लौकडाउन से बाहर रहेंगे और साथ ही, मांसमछली की दुकानें खुली रहेंगी. पशुओं के चारा और कृषि से जुड़े हुए सामान के लाने व ले जाने पर रोक नहीं रहेगी.

उन्होंने बताया कि कोरोना वायरस का संक्रमण मांसमछलियों से जुड़ा हुआ नहीं है और भारतीय पौल्ट्री अभी खाने के लिए सुरक्षित हैं.

उन्होंने बताया कि भारतीय खाद्य संरक्षण एवं मानक प्राधिकरण ने यह रिपोर्ट दी है कि 100 डिगरी के ऊपर खाना बनाने पर कोई भी वायरस बैक्टीरिया नहीं जिंदा रह जाता, बल्कि 70 डिगरी पर ही सभी वायरस और बैक्टीरिया मर जाते हैं.

व्हाट्सएप ग्रुप पर जो भ्रांतियां फैलाई जा रही हैं, खासकर मांसमछलियों को कोरोना से जोड़ना गलत है.

कृषि को ले कर भी महत्त्वपूर्ण जानकारी देते हुए सचिव ने बताया कि गेहूं की फसल कटने का समय हो गया है. ऐसे में कृषि से जुड़े हुए काम लौकडाउन से बाहर हैं और किसानों को फसल काटने की छूट है. इस के लिए किसानों को सावधानी बरतने के निर्देश दिए हैं. किसानों के पुआल जलाने पर भी राज्य सरकार काफी गंभीर है. कोई भी किसान फसल अवशेष को न जलाएं, इस को ले कर सभी जिलाधिकारियों को भी निर्देश दिया गया है. ■

ट्रेनिंग

कोरोना वायरस से बचाव का प्रशिक्षण संपन्न

बस्तर : आज जब सारा देश कोरोना से लड़ रहा है, मां दंतेश्वरी हर्बल समूह ने अनूठी पहल करते हुए अपने समूह के सभी सदस्यों और उन के गांव के लोगों को कोरोना से बचाव के लिए केंद्र व राज्य सरकार के सभी निर्देशों का पालन करते हुए 4 सूत्री फार्मूला बनाया.

ग्रुप के वरिष्ठ किसान डाक्टर राजाराम त्रिपाठी बताते हैं, सब से पहले हमें हर हाल में सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखने की जरूरत है.

इस बारे में उन्होंने बड़े ही अच्छे तरीके से प्रशिक्षण के दौरान प्रदर्शन कर के बताया और समझाया. प्रशिक्षण के दूसरे चरण में कोरोना से बचाव के लिए मास्क की उपयोगिता और उसे सही तरह से लगाने का तरीका बताया गया.

वहीं तीसरे चरण में हाथ धोने के सही तरीके के बारे में बताया गया. इतना ही नहीं, प्रयोगात्मक प्रशिक्षण भी दिया गया कि वैज्ञानिकों के मुताबिक कोरोना वायरस को हटाने के लिए साबुन से कम से कम 20 सेकंड तक हाथ के आगेपीछे उंगलियों के बीच में सभी जगह पानी से धोना जरूरी है. साथ ही, हाथों को सही तरीके से सेनेटाइज यानी कीटाणुरहित करने के तरीके का भी प्रदर्शन किया गया.

प्रशिक्षण के चौथे और आखिरी चरण में कोरोना वायरस से बचाव में मां दंतेश्वरी हर्बल समूह द्वारा तैयार की गई हर्बल चाय के फायदों के बारे में बताया गया.

प्रशिक्षण खत्म होने पर वहां मौजूद सभी को मास्क, साबुन ,सेनेटाइजर और हर्बल चाय के पैकेट बांटे गए. हाथ धोने का प्रशिक्षण संपदा समूह की अध्यक्ष जसमती नेताम ने दिया, वहीं हर्बल चाय बनाने का प्रशिक्षण बलाई चक्रवर्ती और कृष्ण कुमार ने दिया.

कोरोना से बचाव में हर्बल चाय पीने से होने वाले फायदों के बारे में समूह की गुणवत्ता नियंत्रक अपूर्वा त्रिपाठी ने जानकारी दी. ■

-मोईनुद्दीन चिश्ती

बरबादी

दर्जनों गांवों में जंगली सूअरों ने खेती बरबाद की

अल्मोड़ा : ताकुला ब्लौक के दर्जनों गांवों में जहां जंगली सूअरों ने किसानों की आलू, गडेरी, पिनालू और हलदी की खेती को बरबाद कर दिया है, वहीं बंदरों ने गेहूं, जौ, मसूर, मटर और दूसरी सब्जियों को खराब कर दिया है. काश्तकारों ने जिला प्रशासन से सूअरों और बंदरों के आतंक से नजात दिलाने की मांग की है.

ताकुला ब्लौक के तहत एक गांव वाले ने कहा कि सूअरों ने रात में उन के गांव में अनेक किसानों के खेत में लगाए प्याज और आलू बीज खोद कर बरबाद कर दिया है. सूअर के आतंक से किसान खासा परेशान हैं.

वहीं दूसरे किसान ने कहा कि तारबंदी के काम में हुई हीलाहवाली के चलते सरकारी पैसों का गलत इस्तेमाल होने के साथ ही किसानों को भी अच्छीखासी चपत लगी है.

प्रभावित किसानों ने प्रशासन और कृषि विभाग से जानवरों की रोकथाम के उपाय करने और फसलों के मुआवजे की मांग की है. ■

जानकारी

सोशल मीडिया से किसानों को दी जाएगी जानकारी

बक्सर : जिले के किसानों को सभी कृषि योजनाओं की जानकारी सोशल मीडिया और रजिस्टर्ड मोबाइल फोनों के जरीए दी जाएगी.

इस बारे में कृषि विभाग ने तमाम निर्देश जारी किए हैं. इन निर्देशों में कहा गया है कि किसानों के बीच कृषि विभाग द्वारा किए जा रहे कामों की जानकारी समयसमय पहुंचाना बेहद जरूरी है, इसलिए कृषि विभाग के साथसाथ पशु व मत्स्य संसाधन विभाग द्वारा किए जा रहे कामों की जानकारी व्हाट्सएप

व सोशल मीडिया के जरीए वरीय पदाधिकारी सब से पहले अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को देंगे.

इस के बाद कृषि समन्वयक, प्रखंड उद्यान पदाधिकारी, किसान सलाहकार, एटीएम व बीटीएम अपने स्तर से क्षेत्र के किसानों के बीच संदेश पहुंचाएंगे.

इस के लिए कृषि विभाग के लोग अपने क्षेत्राधीन व्हाट्सएप के जरीए किसानों का समूह गठित करेंगे.

बताद दें कि इस के लिए पहले से गठित समूहों को भी प्रभावी ढंग से सक्रिय करने को कृषि विभाग के अधिकारियों कहा है. ■

सहूलियत

बंटाईदार और ठेकेदार भी खरीद केंद्रों पर बेच सकेंगे गेहूं

झांसी : बंटाई और ठेके पर खेती करने वाले किसान भी खरीद केंद्रों पर अपना गेहूं बेच सकेंगे. बंटाईदार को किसान का सहमतिपत्र और ठेकेदार को लेखपाल की संस्तुति के बाद ही खरीद केंद्र पर गेहूं बेचने का हक मिलेगा. इस बार गेहूं खरीद की राशि किसान, बंटाईदारों और ठेकेदारों के खाते में आरटीजीएस से नहीं, बल्कि पीएफएमएस से पहुंचेगी.

जिले में गेहूं खरीद के लिए प्रशासन ने तैयारियां शुरू कर दी हैं. 15 अप्रैल के बाद 57 खरीद केंद्रों को अनुमोदित किया जा चुका है. लेकिन सरकार ने बंटाई और ठेके पर गेहूं की बोआई करने वालों को भी गेहूं खरीद करने का अधिकार दिया है. इस के लिए बंटाईदार और ठेकेदार को किसान और लेखपाल से संस्तुति करानी होगी. वहीं इस के साथ ही बंटाईदार और ठेकेदार को वैबसाइट पर पंजीकरण भी कराना होगा.

नियमों के मुताबिक, ठेके पर जमीन लेने वाले को

रजिस्ट्रार के यहां भी अनुबंध कराना होगा. नियम यह भी है कि यदि कोई किसान 100 क्विंटल से अधिक गेहूं बेचता है, तो उसे एसडीएम से अनुमति लेनी होगी.

जिला खाद्य विपणन अधिकारी अनूप कुमार ने बताया कि गेहूं खरीद के कुछ नियमों में बदलाव किया गया है. 15 अप्रैल के बाद गेहूं खरीद की जाएगी. इस बार गेहूं का समर्थन मूल्य 1,940 रुपए है. ■

सलाह

करें चना और तिलहन का भंडारण

भागलपुर : जिले के किसानों के लिए ग्रामीण कृषि मौसम सेवा की ओर से एडवाइजरी जारी हुई है. इसे कृषि विभाग ने बीएयू सहित दूसरे किसानों के लिए विभिन्न माध्यमों के द्वारा पहुंचाने का निर्देश दिया है. बीएयू ने इस कड़ी में अगले कुछ दिनों के मौसम और खेती संबंधी जानकारी किसानों को दी है.

बीएयू के निदेशक प्रसार शिक्षा डाक्टर आरके सोहाने ने कहा कि एडवाजरी की खूबी यह है कि इस में किसानों को मौसम की सटीक जानकारी के अलावा और क्याक्या करना चाहिए, इस के बारे में विस्तार से बताया जाता है.

कृषि विभाग के गाइडलाइन का पालन करते हुए बीएयू ने किसानों को जो संदेशा भेजा है, उस में मसूर, गेहूं और चने की कटाई समय पर पूरा करने का निर्देश दिया है. साथ ही, महफूज जगहों पर भंडारण का निर्देश दिया है. वहीं सब्जी की फसलें जैसे टमाटर, बैगन, मिर्च की जरूरत के मुताबिक सिंचाई करें. आम और लीची में दवा का घोल बना कर छिड़काव करें और हरी पत्तेदार सब्जियों जैसे पालक, बथुआ वगैरह की बोआई गर्मा फसल के रूप में करें.

किसानों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में मूंग की बोआई कर दें. जानवरों को उन की प्रतिरक्षा बढ़ाने के लिए हर दिन हरा चारा खिलाया जाना चाहिए. खेती के काम में उचित दूरी बना कर रहें. साथ ही, सर्दी, जुकाम, सिरदर्द या बुखार हो तो निकट के स्वास्थ्यकर्मी को तुरंत सूचना दें और जांच कराएं. ■

उत्साह

कोरोना की परवाह किए बगैर खेतों में जुटे पूर्वांचल के किसान

वाराणसी : कोरोना महामारी को हराने के लिए देशभर में लौकडाउन के बीच किसान खेतों में खड़ी सालभर की मेहनत व पसीने से लहलहाती फसल को बचाने निकल पड़ा है.

खास बात यह है कि कोरोना से बचने के लिए देश में सुरक्षा व सावधानी का जो उपाय सरकार की तरफ से बताया गया, उस का पालन भी होता दिख रहा है. सोशल डिस्टेंसिंग से ले कर साबुन से हाथ धोने का काम खेतखलिहान में काम करते मजदूरों के बीच देखा जा सकता है. खेतखलिहान में उन मजदूरों को ज्यादा वरीयता मिल रही है, जो कमाने के चक्कर में गांव छोड़ कर बाहर नहीं गए हैं.

एक तरफ कोरोना के चलते मास्क व दस्ताना लगा कर लोग शहर में दिखाई दे रहे हैं, तो वहीं दूसरी तरफ खेतों में कटाई से ले कर मड़ाई करते मजदूर मुंह पर गमछा या दुपट्टा बांध कर जुटे हैं.

पूर्वांचल के किसानों को कोरोना संक्रमण की परवाह किए बगैर चिलचिलाती धूप और पछुवा हवाओं के बीच खेतखलिहान में देखा जा सकता है. पूर्वांचल के भदोही, वाराणसी, चंदौली, गाजीपुर, बलिया, मऊ, आजमगढ़, जौनपुर, मिर्जापुर और सोनभद्र का किसान घरों के बजाय खेतों में है.

राज्य की योगी सरकार ने किसानों को लौकडाउन से छूट दी है, क्योंकि गेहूं, सरसों, मटर, चना, मसूर, जौ, अरहर की फसल तैयार है.

अगर कोरोना के भय से किसान फसलों की कटाई नहीं करता है तो उस के सामने स्थिति बुरी हो सकती है. मौसम खराब होने से फसलें जहां खराब हो सकती हैं, वहीं किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है.

मार्च माह में बारिश हो जाने की वजह से किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ा है. पूरे पूर्वांचल में आंधीतूफान और बारिश की वजह से गेहूं, सरसों, जौ और तिलहनी फसलों को भारी नुकसान पहुंचा था. गेहूं की फसल गिर गई थी, जिस से फसलों की पैदावार प्रभावित हुई. एक किसान का कहना है कि बारिश होने से सरसों की उपज कम हुई है, वहीं गेहूं का उत्पादन भी प्रति बीघा घटा है.

21 दिन से ज्यादा के लौकडाउन के कारण मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को किसानों के लिए और सुविधाओं का ऐलान करना चाहिए. पूर्वांचल का किसान अलसुबह सपरिवार खेतों पर निकल रहा है.

घर में रूखीसूखी जो भी मिलती है, उसी से अपना काम चला रहा है क्योंकि अभी उस की प्राथमिकता में फसलों की मढ़ाई पहले है. वह दिन और रात में भी फसलों की कटाई और मढ़ाई में जुटा हुआ है.

महिलाओं ने भी कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से खेतों में काम करने वाली महिला मजदूरों के लिए भी खास सुविधा देने की मांग की है. ■

राहत

भोरमदेव शुगर मिल में काम शुरू

कवर्धा : गन्ना किसानों के लिए राहत की खबर यह है कि जिले के सभी पंजीकृत किसानों का गन्ना खरीदी हो गया है.

वहीं प्रदेश के पहले ग्राम राम्हेपुर स्थिति भोरमदेव शुगर मिल कारखाना में खरीदी शुरू की गई, लेकिन यहां पंडरिया के शुगर मिल के बचे हुए किसानों की भी गन्ना खरीदी की जाएगी.

गन्ना खरीदी किए जाने को ले कर भारतीय किसान संघ ने जिला प्रशासन का अभार जताया है. वहीं दूसरी ओर जिला अध्यक्ष दानेश्वर परिहार ने बताया कि किसानों की स्थिति बेहद खराब है. ऐसी स्थिति में जिला प्रशासन ने कारखाने को शुरू करा कर किसानों के हित में बहुत ही अच्छा काम किया है.

कलक्टर अवनीश कुमार शरण ने जानकारी देते हुए बताया कि कारखाना शुरू किए जाने को ले कर लिए अपनी सहमति दे दी है.

उन्होंने अपने निर्देश में गन्ना खरीदी के दौरान किसानों और मिल के कर्मचारियों के बीच आपस में उचित दूरी बनाए रखने के लिए कहा है. ■

खुशखबरी

पीएम किसान सम्मान निधि योजना में लाखों किसानों को मिला लाभ

नई दिल्ली : किसानों को खेतीबाड़ी में कोई समस्या न हो, इसलिए केंद्र सरकार उन का पूरा सहयोग करती है. देश के अन्नदाता को उच्च स्तर पर रखा जाता है. ऐसे में उन को खेतीबाड़ी में कोई समस्या न आए, इसलिए मोदी सरकार ने किसानों के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना को चलाया है. इस योजना के तहत किसानों के खाते में सीधे 2-2 हजार की रुपए की राशि भेजी जाती है.

अब तक करोड़ों रुपए की सहायता : मोदी सरकार की पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत 62 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा की मदद की जा चुकी है.

सभी जानते हैं कि इस वक्त देश पर कोरोना वायरस का संकट है. इस दौरान सरकार ने किसानों के खाते में 2-2 हजार रुपए भेजे हैं. इस योजना के तहत सरकार द्वारा 4.91 करोड़ रुपए भेजे जा चुके हैं.

कृषि मंत्रालय की मानें, तो देश में पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत में लगभग 9 करोड़ किसान रजिस्टर्ड हो चुके हैं. इस के लिए सरकार ने लगभग 18 हजार करोड़ रुपए की राशि रखी है. बता दें कि देश में लगभग 14.5 करोड़ किसान हैं, लेकिन इस योजना से कई किसान अभी भी नहीं जुड़ पाए हैं.

इतने करोड़ रुपए हुए ट्रांसफर : कृषि राज्यमंत्री कैलाश चौधरी द्वारा बताया गया है कि लौकडाउन के बीच लगभग 5 करोड़ किसानों के

खाते में 2-2 हजार रुपए भेजे जा चुके हैं. इस वक्त किसानों और गरीबों को समस्या न हो, इसलिए सरकार ने एक बड़ा आर्थिक पैकेज का ऐलान किया है. इस के तहत डायरैक्ट बैनीफिट ट्रांसफर द्वारा लगभग 9826 करोड़ की राशि भेजी जाएगी. ■

भानु प्रकाश राणा, अक्षय कुलश्रेष्ठ व सुनील शर्मा

सवाल : मैं ने 30 पपीते के पेड़ लगाए हैं. रेड लेडी नर्सरी से ला कर, मगर मुश्किल से 6 पेड़ ही बचे हैं. अब इन पेड़ों में समस्या यह है कि उस के पत्ते और तने मुड़ रहे हैं. पपीते के पेड़ की ऊंचाई 6 फुट हुई है अभी और कुछ फल भी आए हैं, मगर छोटे हैं. मैं क्या करूं?

-वर्गीश आर्य, उत्तर प्रदेश

जवाब : पौधे लगाने से पहले सही स्थान का चुनाव, मानक गड्ढे की खुदाई, मृदा शोधन, पौध शोधन कर के पौध लगाया जाए तो न चलने की संभावना कम होती है.

अगली बार आप इन बातों का खयाल रखिएगा, तो सफलता जरूर मिलेगी. पत्तियों के मुड़ने की जो समस्या है, वो वायरसजनित बीमारी मोजैक रोग है.

प्रभावित भाग को काट कर जमीन में दबा दें, अन्यथा और फैलेगा, और किसी कारगर कीटनाशी का छिड़काव करें. फल जो छोटे हैं, उस के लए आप थालों की बढ़िया गुड़ाई कर के उस में वर्मी कंपोस्ट डालने के बाद एनपीके और कुछ दिनों के अंतराल पर सूक्ष्म पोषक तत्त्वों का मिश्रण हलकी नमी होने पर डालें.

❋❋❋

सवाल : गरमियों के समय के दौरान पशुपालन में किनकिन बातों का खासा ध्यान रखा जाना चाहिए. कृपया सही जानकारी दें?

-टीकाराम, सिकंदराबाद

जवाब : गरमियों के मौसम में पशुओं को सेहतमंद रख कर अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए पशुपालकों को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:

☛ अधिक तापमान बढ़ने की स्थिति में पशुओं को छायादार स्थानों पर बांधें और पशुशाला की खिड़कियों पर बोरे के परदे लगा दें. अधिक गरमी और लू चलने की स्थिति में पानी का छिड़काव समयसमय करते रहें.

☛ गर्भित पशुओं के उत्तम स्वास्थ्य के लिए इस समय मक्का, लोबिया, ज्वार, बाजरा और चरी की बोआई जरूर करें.

☛ गरमी में चारा उपलब्ध कराने के लिए इस समय मक्का, लोबिया, ज्वार, बाजरा और चरी की बोआई जरूर कर लें.

☛ पशुशाला की साफसफाई करें और हर साल पुताई अवश्य कराएं.

☛ पशुओं के पेट में कीड़ों की रोकथाम करने के लिए उचित कृमिनाशक दवा दें और शरीर पर लगने वाले कीड़ों से भी बचाव का सही प्रबंध करें.

☛ खनिजों की कमी की पूर्ति के लिए हरेक पशु को 50 ग्राम खनिज लवण मिश्रण प्रतिदिन अवश्य दें.

☛ पशुओं को साफ पानी दिन में 3 बार जरूर पिला दें.

☛ पशुओं को संक्रामक बीमारियों जैसे गलघोंटू, खुरपका, मुंहपका और लंगड़िया बुखार आदि का टीकाकरण बरसात से पहले जरूर करवा दें.

☛ पशुपालक भाई उपरोक्त समस्त काम कोरोना वायरस से बचाव के उपायों जैसे चेहरे पर मास्क लगाना, एकदूसरे से प्रर्याप्त दूरी को बनाए रखना, हाथों को बारबार साबुन से साफ करना वगैरह उपायों को ध्यान में रख कर ही पशुओं से जुड़े काम पूरे करें.

जवाब : *मनीष अग्रहरि, डा. राघवेंद्र विक्रम सिंह*

दिक्कत आप की दवा *फार्म एन फूड* की

खेतीकिसानी से जुड़ी अपनी समस्याएं हमें लिख कर भेजें. आप की समस्याओं का समाधान एक्सपर्ट करेंगे. समस्या के साथ अपना नाम व पता जरूर लिखें. आप हमें SMS भी कर सकते हैं.

सवाल जवाब विभाग, फार्म एन फूड
ई-8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55
ई-मेल: farmnfood@delhipress.in
SMS के लिए नंबर : 08447177778

जागरूक करती पत्रिका

'फार्म एन फूड' के 16 मार्च, 2020 अंक में छपी संपादकीय अच्छी लगी. इस में दी गई जानकारी ने आम लोगों की आंखें खोल दीं. एक ओर जहां सर्कल रेट का खुलासा किया गया, वहीं दूसरी ओर इस देश का पढ़ालिखा एयरकंडीशंड कमरों में बैठने वाला अफसर, बाबू, धन्ना सेठ आम मेहनती लोगों की सोचता ही नहीं, वाकई दिल को छू गया. वहीं मुख्य लेख 'स्ट्राबेरी की खेती से किसान मालामाल' काफी जानकारी देने वाला लगा. किसान स्ट्राबेरी की खेती कर कमाई कर सकते हैं. खेती करने से पहले इस की खेती के बारे में जानकारी हासिल करनी चाहिए, ताकि खेती मुनाफे का सौदा बन सके.

लेख 'पशुपालन में उन्नत तकनीकियां' काफी अच्छा लगा, क्योंकि इस में दी गई जानकारी पशुपालकों को बड़े ही काम की लगी. भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली ने इस दिशा में जो काम किया है, वह सराहनीय है. इस संस्थान ने पशुओं के लिए कई दवाएं ईजाद की हैं, जो पशुओं की सेहत के लिए बड़े ही काम की हैं.

वैसे तो आम किसानों में यह पत्रिका अपनी पैठ बना चुकी है, वहीं पशुपालकों में भी यह खासा चर्चित होती जा रही है, क्योंकि इस पत्रिका में उन की समस्याओं से जुड़ी जानकारी होती है.

-राजाराम तिवारी, इलाहाबाद

❋❋❋

सम्मान मिला तो हौसला बढ़ा

'फार्म एन फूड' के 16 मार्च, 2020 अंक में छपा लेख 'फार्म एन फूड अवार्ड में किसानों ने लगाए स्टाल, मिला सम्मान' दिल को छू गया. इस अवार्ड का आयोजन कर के इस पत्रिका ने आम किसानों के दिल में जो जगह बनाई है, काबिलेतारीफ है.

बस्ती जिले में 20 फरवरी, 2020 को आयोजित दिल्ली प्रैस की पत्रिकाओं में शुमार 'फार्म एन फूड' पत्रिका ने वाकई कमाल कर दिया. इस आयोजन में तमाम किसानों ने अपनेअपने स्टाल लगा कर यह जता दिया कि आम किसान अब जागरूक है. वह अपनी फसल को मंडी में ही नहीं, अपितु इस तरह के आयोजन में प्रदर्शनी लगा कर अपने उत्पाद को बेहतर तरीके से पेश कर सकता है.

एक ओर जहां किसान राम रक्षा ने दुर्लभ जड़ीबूटियों का प्रदर्शन किया, वहीं राममर्ति मिश्र ने काला नमक चावल और जैविक सब्जियों का स्टाल लगा कर वाहवाही लूटी. किसान अरविंद पाल ने जैविक अलसी, देशी सुगंधित चावल और समन्वित खेती का मौडल सामने रखा, तो किसान अहमद अली भी पीछे नहीं रहे. उन्होंने जैविक शहद, टमाटर, गाजर, केला सहित दर्जनों फसलों का प्रदर्शन किया.

-विकास कुमार, बस्ती

❋❋❋

लुभा गई पत्रिका

'फार्म एन फूड' के 16 मार्च, 2020 अंक में छपा लेख 'सब्जियों की खेती में जड़गांठ और रोग : पहचान और रोकथाम' पढ़ कर काफी रोचक लगा, वहीं लेख 'फसल के डंठल और जड़ें खेत में मिलाए मोबाइल श्रेडर' वाकई बड़े ही काम की मशीन लगी.

लेख 'जैविक खादें गुणवत्ता से भरपूर' और 'अनार की आधुनिक खेती' जानकारी भरे लगे. इस के अलावा लेख 'नन्हे पर्यावरण प्रेमी अर्जुन ने लगाए सैकड़ों पौधे' ने वाकई प्रेरणा देने वाला काम किया. अर्जुन की जितनी तारीफ की जाए, कम है.

पत्रिका में छपे लेखों व बातों पर आप की राय आमंत्रित है. अगर आप किसी खास लेख/लेखक के बारे में कुछ और कहना या जानना चाहते हैं, तो कृपया हमें इस पते पर लिखें : खतोकिताबत, ***फार्म एन फूड***, ई-8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. या SMS द्वारा इस फोन नंबर **08447177778** पर भेजें.

गृहशोभा सरिता मुक्ता

सरस सलिल सत्यकथा मनोहर कहानियां

पत्रिकाओं की सैकड़ों रोचक कहानियां पढ़ने के लिए आज ही डाउनलोड करें

Kahani सरिता ऐप

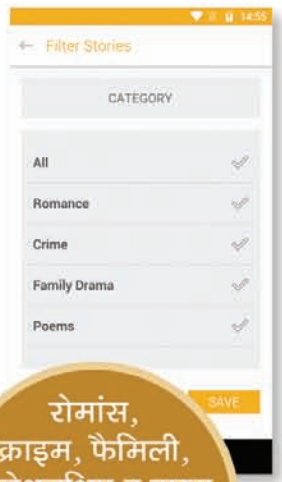

रोमांस, क्राइम, फैमिली, रिलेशनशिप व हास्य में से अपनी पसंदीदा विधा चुनने का विकल्प

पसंदीदा कहानियों को औफलाइन सेव करने की सुविधा

प्रतिदिन नई कहानियां व व्यंग्य

सुविधानुसार फौंट साइज कमज्यादा करने की सुविधा

गूगल प्लेस्टोर पर उपलब्ध

DELHI PRESS MAGAZINES

अच्छी मिट्टी से मिले अच्छी पैदावार

मिट्टी और पानी खेती के आधार हैं. अगर मिट्टी का मिजाज फसल के मुताबिक न हो तो अच्छी फसल नहीं हो सकती. पेश हैं मिट्टी की सेहत से जुड़ी अहम जानकारियां.

* बीरेंद्र बरियार ज्योति

स्वस्थ मिट्टी और उस की उर्वरा ताकत ही अच्छी उपज का आधार है. इस के बगैर खेती के तमाम उपाय, मेहनत और पूंजी बेकार हो सकती है. आज देश के ज्यादातर इलाकों में ज्यादा फसलों के उत्पादन, रासायनिक खादों और कीटनाशकों के अंधाधुंध इस्तेमाल से मिट्टी की सेहत और उस की उर्वरा ताकत दोनों को काफी नुकसान हो रहा है. इस का बुरा असर फसलों के उत्पादन पर पड़ने लगा है. लंबे समय तक अच्छी और ज्यादा उपज पाने के लिए समयसमय पर मिट्टी की जांच कराना जरूरी है. जांच रिपोर्ट के आधार पर ही खादों का इस्तेमाल किया जाए, तो मिट्टी और किसान की बल्लेबल्ले हो सकती है.

किसानों को यह समझना होगा कि उम्दा

और ज्यादा फसल पाने के लिए उन्नत बीज, अच्छी खाद, सही तरीके से सिंचाई और उन की मेहनत व पूंजी ही काफी नहीं हैं. नियमित रूप से मिट्टी की जांच कर उस का उपचार करते रहने से ही किसान अच्छी उपज पा सकता है. मिट्टी की जांच और उस के उपचार की जानकारी ज्यादातर किसानों को नहीं है और जिन्हें इस की जानकारी है भी तो वे गंभीरता से नहीं लेते हैं.

कुछ किसानों से बातचीत करने पर यही पता चलता है कि उन्हें मिट्टी की सेहत के बारे में जरा भी पता नहीं है. बिहार के नालंदा जिले के किसान दिनेश कुमार कहते हैं कि वे बस यही जानते हैं कि खाद और पानी डालने से फसल अच्छी होती है.

कृषि वैज्ञानिक वेदनारायण सिंह कहते हैं कि किसानों को मिट्टी की सेहत के प्रति जागरूक होने की जरूरत है. मिट्टी 2 तरह की होती है, एक अम्लीय और दूसरी क्षारीय. क्षारीय (ऊसर) मिट्टी 3 तरह की होती है, एक क्षारीय, दूसरी लवणीय और तीसरी लवण वाली क्षारीय. मिट्टी की समयसमय पर जांच करवा कर जांच रिपोर्ट के अनुसार उस का उपचार कर फसलों की पैदावार और मुनाफे में कई गुना ज्यादा इजाफा कर सकते हैं.

अगर किसी खेत की मिट्टी में अम्ल की मात्रा बहुत ज्यादा हो जाए, तो उसे अम्लीय मिट्टी कहते हैं और उस को चूने से सुधारा जा सकता है. प्रति हेक्टेयर 2-3 टन चूना डाल कर अम्लीय मिट्टी को

दुरुस्त किया जा सकता है.

5 सालों में सिर्फ एक बार ही खेतों में चूना डालें. अन्य अम्लीय मिट्टी में नाली बना कर 4-5 क्विंटल चूना हर साल प्रति हेक्टेयर डाल कर बेहतर उपज पाई जा सकती है.

मिट्टी जांच रिपोर्ट के आधार पर ही चूने का इस्तेमाल करना चाहिए. लवणीय मिट्टी को सुधारने के लिए खेत से पानी को निकालने की व्यवस्था मजबूत बनानी होगी. मेंड़ को ऊंचा कर पानी को मिट्टी में लगा रहने दें. इस से मिट्टी में लगा लवण घुल जाएगा. उस के बाद उस पानी को नाली के जरीए बाहर निकाल देने से मिट्टी दुरुस्त हो जाती है.

इसी तरह से अगर मिट्टी में क्षारीयता आ जाती है, तो उसे ठीक करने के लिए पानी की निकासी को ठीक करने के साथ जिप्सम, गंधकीय प्रेसमड (चीनी मिल का पदार्थ), कंपोस्ट व पाइराइट डालने की जरूरत होती है. किस खेत की मिट्टी में कितना मिट्टी सुधारक डालना है, यह मिट्टी की जांच के बाद ही तय किया जा सकता है.

औसतन प्रति हेक्टेयर 50 क्विंटल प्रेसमड या 200 क्विंटल कंपोस्ट की जरूरत होती है. बरसात से पहले मिट्टी जांच रिपोर्ट के आधार पर खेत में पाइराइट या जिप्सम को छिड़क कर पाटा चला दें. एक हफ्ते बाद गहरी सिंचाई कर दें. इस से मिट्टी की क्षारीयता बहुत हद तक कम हो जाती है, जिस से मन मुताबिक फसल की उपज पाई जा सकती है.

कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा 3 साल पर हर खेत की मिट्टी की जांच कराएं और खाद की मात्रा जरूर तय करवाएं. एक एकड़ से ज्यादा बड़े खेत में से 2-3 जगहों से मिट्टी का नमूना जांच के लिए लेना चाहिए.

अगर खेत के किसी हिस्से में फसल की उपज में फर्क हो या मिट्टी के रंग में अंतर हो या मिट्टी के भारीपन में फर्क हो या ऊसर हो तो उस भाग का अलग नमूना लें.

ऊसर वाली मिट्टी की पापड़ी का नमूना अलग से लें और इस के नीचे की मिट्टी की गहराई का अलगअलग नमूना जमा कर जांच के लिए निकालें.

खेत से खरपतवार हटा कर करीब आधा किलोग्राम मिट्टी प्लास्टिक या कपड़े के थैले में जमा करें.

जिस थैली में मिट्टी रखी गई है, उस पर किसान का नाम, गांव का नाम, खेत में उपजाई जाने वाली फसल का नाम, सिंचाई व्यवस्था, खेत का नंबर और पता, उर्वरक पर खर्च की जाने वाली रकम को एक कागज पर लिख कर चिपका कर जांच के लिए प्रयोगशाला में भेजना चाहिए. मिट्टी के नमूने को जांच के लिए कृषि विश्वविद्यालय की मिट्टी जांच प्रयोगशाला में ही भेजें और कृषि अफसरों की सलाह को जरूर मानें. ■

लाख कीट पालन

* डा. अरविंद कुमार

लाख एक कुदरती राल है, जो केरिया लेका नाम के कीट द्वारा पैदा की जाती है. यह मादा कीट के शरीर से लिक्विड के रूप में निकलती है और हवा के संपर्क में आने पर सख्त हो जाती है.

लाह यानी लाख के उत्पादन में झारखंड एक अग्रणी राज्य है, जिस का उत्पादन खासकर जंगलों या जंगल के किनारे रहने वाले जनजाति समुदाय द्वारा किया जाता है. इन जनजातियों के लिए लाह उत्पादन जीविका का एक खास जरीया है.

अब तक लाख कीट पालन कुसुम पलास व बेर के पेड़ों पर ही किया जाता रहा है, जिस में कई परेशानियों का सामना करने के बाद भी पैदावार में कमी आ रही है. हमें लाख कीट पालन के लिए ऐसे पौधे का चुनाव करना होगा, जिस का मैनेजमैंट आसान तरीके से किया जा सके और उस पर लाख का उत्पादन जल्द लिया जा सके.

फ्लेमेंजिया सेमियालता ऐसा ही एक उपयुक्त पौधा है, जो कई सालों तक रहता है. इस में लाह के पोषक तत्त्व इफरात से मौजूद रहते हैं. इस की ऊंचाई तकरीबन 2 मीटर से ले कर 3 मीटर तक होती है.

इस पौधे में फूल अक्तूबरनवंबर महीने में आते हैं और इस का फल जनवरीफरवरी महीने तक पक जाता है. फ्लेमेंजिया सेमियालता जाड़े के मौसम में कुसुमी लाख उत्पादन के लिए बहुत ही सही पाया गया है.

पौध की तैयारी और रोपाई

फ्लेमेंजिया सेमियालता पौधे के लिए मिट्टी में थोड़ी अम्लीयता के साथ पीएच मान साढ़े 5 के आसपास होना अच्छा माना गया है.

इस की नर्सरी थोड़ी ढलाऊ जगह पर होनी चाहिए, जिस से फालतू पानी आसानी से निकाला जा सके. फ्लेमेंजिया सेमियालता की पौध बीज के अलावा डालियों द्वारा भी नर्सरी में आसानी से तैयार की जा सकती है.

बीज बोआई से पहले नर्सरी में 9×1.2 मीटर के लंबेचौड़े और 4 इंच ऊंचे बैड तैयार

कर लें और बीज को सीधे बैड में या प्लास्टिक की थैलियों में, जिस में 2:1:1 के अनुपात में मिट्टी, सड़ी गोबर की खाद व बालू का मिश्रण भर कर अप्रैलमई महीने में बीज की बोआई की जा सकती है.

बीज बोआई के बाद समयसमय पर हलकी पलटाई करते रहना चाहिए. नर्सरी में पौध से पौध की दूरी 8-10 सैंटीमीटर कर देने से पौधे की बढ़वार अच्छी होती है.

पौध रोपण के एक महीने पहले ही मईजून महीने में 45×45×45 सैंटीमीटर आकार के गड्ढे सिंचित व 30×30×30 सैंटीमीटर असिंचित इलाकों के लिए खोद लेने चाहिए. गड्ढों की खुदाई पौधे से पौधे की दूरी 1 मीटर व लाइन से लाइन की दूरी 2 मीटर के आधार पर करनी चाहिए.

पौध रोपण के पहले हर गड्ढे में 5-10 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद डालनी चाहिए. फ्लेमेंजिया पौधे की लंबाई कम होने के चलते इस पर लाख कीट पालन दूसरे पोषक पौधों के मुकाबले में ज्यादा आसान है और पौध रोपण के एक से डेढ़ साल बाद लाख कीट को पौधों पर छोड़ा जाता है.

फ्लेमेंजिया की खेती करते समय लाइनों के बीच में फल व सब्जियों की खेती कर ज्यादा फायदा कमा सकते हैं. फ्लेमेंजिया का पौधा छोटा होने के चलते इस का मैनेजमैंट भी ठीक तरह से किया जा सकता है.

फ्लेमेंजिया पौधे पर लाख कीट की कुसुमी प्रजाति बहुत ही सही पाई गई है. फायदे के नजरिए से जाड़े वाली फसल ज्यादा उपयुक्त है. कुसुमी लाख कीट को जुलाई महीने में 20 ग्राम प्रति पौधे की दर से छोड़ना चाहिए.

लाख कीट को नुकसानदायक कीटों के हमले से बचाने के लिए बीहान लाख को 60 मेस की प्लास्टिक की जाली में भर कर ही इस्तेमाल करना चाहिए.

लाख लगाने के 21 दिन बाद पेड़ों में बंधी हुई बीहन लाख, जिसे फूंकी भी कहा जाता है, को उतार लेना चाहिए व फूंकी लाख को खत्म न कर के उसे छील कर बेच देना चाहिए.

लाख कीट की हिफाजत

पौधे पर लाख कीट छोड़ने के एक महीने बाद या फूंकी उतारने के एक हफ्ते बाद नुकसानदायक कीटों का इंफेक्शन शुरू हो जाता है. हमें इसी अवस्था पर ही कीटनाशक दवा का पहला छिड़काव 60 दिन बाद जरूरत के मुताबिक करना चाहिए. इन कीटनाशकों का छिड़काव लाख कीट के दुश्मन कीट जैसे काली तितली, सफेद तितली व क्रोइसोपा वगैरह से बचाव के लिए किया जाता है.

किसी भी अवस्था में नर लाख कीट निकलने के समय कीटनाशक या फफूंदनाशक दवा का छिड़काव नहीं करना चाहिए. ऐसा करने से नर कीट मर सकते हैं, जिस से निषेचन क्रिया नहीं हो पाएगी और अगली फसल के लिए बीहन की पैदावार नहीं मिलेगी. फफूंद से बचाव के लिए बाविस्टीन दवा की 3 ग्राम मात्रा का 14 लिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव किया जाना चाहिए.

लाख की कटाई

लाख फसल की कटाई के समय पौधे को जमीन से 10-15 सैंटीमीटर ऊपर से सीकेटियर द्वारा काटना चाहिए. इस से पौधे की काटछांट भी हो जाती है. कटाई के बाद पौधे की बढ़वार अच्छी हो, इस के लिए पौधों के किनारे की मिट्टी की अच्छी तरह से गुड़ाई करनी चाहिए व गोबर या केंचुए की खाद का इस्तेमाल करना चाहिए. ■

लाख कीट पालन में ध्यान देने वाली बातें

- अच्छा लाख उत्पादन के लिए फ्लेमेंजिया सेमियालता की जरूरत के मुताबिक सिंचाई करनी चाहिए.
- लाह बीहन खुला न लगा कर 60 मेस की प्लास्टिक जाली में बांध कर ही करना चाहिए.
- कीट या फफूंदनाशक दवा का छिड़काव नर कीट निकलने के समय नहीं करना चाहिए.
- लाख उतारते समय पौधे की जड़ें फटने न पाएं, अन्यथा पौधे सूख सकते हैं.
- लाख उतारने के बाद हर पौध की निराईगुड़ाई करना जरूरी है.

सब्जियों में सिंचाई

✻ मनीष अग्रहरि

सब्जियों का 90 फीसदी या इस से ज्यादा भाग जल से बना होता है. ऐसे में सब्जियां जल के प्रति अति संवेदनशील होती हैं. ज्यादा सिंचाई और कम सिंचाई दोनों ही हालात सब्जियों पर भारी पड़ते हैं. जल पोषक तत्त्वों के लिए विलेय का काम करता है. जल से सारे पोषक तत्त्व पूरे पौधे तक पहुंच पाता है.

ऐसे में जरूरत होती है कि सब्जियों से अच्छी आमदनी के लिए समुचित सिंचाई का इंतजाम किया जाए, खासकर फूल आते समय, फलों की बढ़ोतरी के समय जल की कमी से पैदावार घट जाती है.

आइए जानते हैं, विभिन्न सब्जियों में किनकिन अवस्थाओं पर पानी की कमी या अधिकता से क्याक्या असर पड़ता है:

जड़ वाली सब्जियों में प्रमुख रूप से गाजर और मूली शामिल है. जड़ों की बढ़वार के समय मिट्टी में नमी की कमी से जड़ों का विकास रुक सा जाता है. जड़ें टेढ़ीमेढ़ी और खुरदरी हो जाती हैं और जड़ों में नाइट्रेट की मात्रा बढ़ जाती है, जो सेहत के लिए नुकसानदायक है.

खेत के सूखे रहने के बाद अचानक सिंचाई करने से जड़ें फट जाती हैं. जड़ों के विकास के समय ज्यादा नमी होने पर जड़ों के मुकाबले पत्तियों का विकास ज्यादा हो जाता है.

प्याज : यह उथली जड़ वाली फसल होती है, इसलिए इस में बारबार, मगर हर बार हलकी सिंचाई करनी चाहिए. कंदों के विकास के समय नमी की कमी होने पर 2 शल्ककंद बनते हुए या शल्ककंदों को फटते हुए देखा गया है.

बैगन : इस में ज्यादा जल भराव से जड़ विगलन रोग लगने की संभावना होती है, जबकि कम नमी होने की दशा में फलों का रंग हलका हो जाता है.

टमाटर : मिट्टी में नमी के उतारचढ़ाव से फल फट जाते हैं, जबकि नमी की कमी होने पर मिट्टी में कैल्शियम की कमी हो जाती है. इस से पुष्पवृंत सड़ने लगता है और फूल झड़ने लगता है. फूल आते समय मिट्टी में नमी की कमी होने पर फूल झड़ने लगते हैं या फल छोटे होने लगते हैं.

मटर : यह एक दलहनी फसल है, जिस में कम सिंचाई की जरूरत होती है. ज्यादा सिंचाई करने से पौधे जड़ से सूखने लगते हैं. इस में 2 सिंचाई बहुत जरूरी हैं. पहली, फूल आते समय तकरीबन 30-40 दिनों पर.

प्रमुख सब्जियों में सिंचाई की क्रांतिक अवस्था

सब्जी	क्रांतिक अवस्था	जल की कुल मात्रा (सैंटीमीटर)
मूली	जड़ के विकास के समय	20–35
गाजर	जड़ के विकास के समय	20–30
टमाटर	फूल आने व फल के विकास के समय	40–90
बैगन	फूल व फल आने के समय	50–110
मिर्च	फूल आने पर व फल निषेचन के बाद	45–100
पत्तागोभी	बंद के विकास के समय	15–20
फूलगोभी	फूल के विकास के समय	30–35
प्याज	कंद के निर्माण व विकास के समय	50–75
भिंडी	फूल आने के समय	25–60
खीरा	फूल व फल आने के समय	25–50
खरबूजा	लता विकास के समय, फूल आने पर	50–60

दूसरी, फली विकास के समय तकरीबन 50-60 दिनों पर.

मिर्च और शिमला मिर्च : इस में लगातार नमी का बना रहना जरूरी है. कम नमी की दशा में फूल व छोटे फल गिर जाते हैं और पौधा फिर से सिंचाई करने पर भी समायोजित नहीं हो पाता है. कम नमी होने के चलते पोषक तत्त्वों का अवशोषण कम हो जाता है, जिस से फलों का विकास रुक जाता है.

पत्तागोभी : फसल की शुरुआती अवस्था में ज्यादा नमी होने की दशा में जड़ों का ज्यादा विकास हो जाता है, जबकि शीर्ष (बंद) फट जाता है. काफी समय तक सूखा रहने के बाद सिंचाई करने पर या बारिश होने पर बंद फट जाता है.

खीरा, ककड़ी, तरबूज : कुकर विदेशी कुलकी ये सब्जियां पानी के प्रति अतिसंवेदनशील होती हैं. खरबूजा व तरबूज में फलों के पकने के समय सिंचाई नहीं करनी चाहिए. इस से फलों की सुगंध, खुशबू और मिठास कम हो जाती है. खरबूजे में पकने के समय सिंचाई करने पर विटामिन सी और विलेय पदार्थों की मात्रा घट जाती है.

तरबूज के पकते समय सिंचाई करने पर त्वचा फट जाती है. गूदे रेशेदार व कम रसीले होते हैं व फलों की क्वालिटी खराब हो जाती है, जबकि फलों के बढ़वार के समय नमी की मात्रा कम होने पर फलों में नाइट्रेट की मात्रा बढ़ जाती है, जो सेहत के लिए बहुत ही नुकसानदायक है.

खीरे में जलभराव की दशा में पत्तियां पीली पड़ जाती हैं और लताओं का विकास रुक जाता है, वहीं फूल आने पर मिट्टी में नमी की कमी के चलते पराग कण खराब व मरे हुए बनते हैं. इस से फसल उत्पादन कम हो जाता है. फलों के विकास के समय नमी की कमी में फलों का आकार बिगड़ जाता है और फलों में कड़वाहट होती है. ■

खेतीकिसानी में रसायनमुक्त होना

✻ राजूराम राठौड़

अब मौसम बदल रहा है. पतझड़ के बाद पेड़ो में पत्तियां झड़ कर गिर रही हैं. इन्हें बुहार कर गोबर के ढेर में मिलाएं, जिस से कि गोबर की खाद ज्यादा असरकारक व बढ़िया क्वालिटी वाली बने. वेस्ट डीकंपोजर को उपयोग करते रहें. इस में आप लाल रंग व पीले रंग की भी रौक फास्फेट मिलाएं. सरसों की खली जरूर समाहित करें. लकड़ी का बुरादा हो तो वह भी मिलाएं. खेत मे जमीनी फंगस को रोकने के लिए नीम खली भी जरूरत के मुताबिक इस्तेमाल करें. बहुत ही कम समय में खाद बनेगी.

इस के साथ ही साथ कुछ पेड़ों में गरमी में तने और डालियों से गोंद निकलता है, उसे आप सभी जरूर इकट्ठा कर के रखें. आप को बाजार से अभी स्प्रे स्टिकर की जरूरत नहीं रहेगी.

कुदरत के इस अनमोल उपहार को कम नहीं समझें. किसी भी तरह के गोंद को आप वेस्ट डीकंपोजर के कल्चर में घोल कर इस्तेमाल कर के देखिए, यह बहुत ज्यादा स्टिकर का काम करता है. बाजार के खरीदे गए स्टिकर से भी ज्यादा. ये बाल वाली इल्लियों पर असरदार रहा है

अगर आप अपने घर पर लंबे समय के लिए कोई भी स्प्रे स्टिकर उत्पाद बनाना चाहते हैं, तो एलोविरा, गोंद, लसोटा, भिंडी फल, भिंडी फूल, राजस्थानी मरुस्थल बहुपयोगी झाड़ी गांगण की छाल व फूल, नकचिकनाई जैसे उत्पादों का उपयोग कर के अपनी फसल को रसायनमुक्त और रोगमुक्त बना सकते हैं. इस वेस्ट डीकंपोजर का कोई तोड़ नहीं. ■

पपीते की खेती और खास प्रजातियां

पपीता भारत का एक पाचक, पौष्टिक और पसंदीदा फल है. जिस की खेती देश के अलगअलग हिस्सों में की जाती है. इस की व्यावसायिक बागबानी भारत, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका व अमेरिका महाद्वीप के देशों में की जाती है. इस के फलों का दूध विभिन्न प्रकार के रोगों के इलाज में इस्तेमाल किया जाता है.

पपीते में विटामिन ए की मात्रा सारे फलों में आम के बाद दूसरे स्थान पर है. पपीते के पुष्पों को लिंग के आधार पर मुख्यतया नर, मादा व उभयलिंगी प्रकार में बांटा गया है. पपीते की उन्नत खेती करने के लिए अच्छे व स्वस्थ बीज का चुनाव बहुत जरूरी है.

भूमि व जलवायु

पपीते की सफल बागबानी के लिए गहरी और उपजाऊ, सामान्य पीएच मान वाली बलुई दोमट मिट्टी अत्यधिक उपयुक्त मानी गई है. इस की बागबानी के लिए भूमि में जल निकास का होना बहुत जरूरी है. जल भराव इस फसल के लिए काफी नुकसानदायक है.

पपीता एक उष्ण कटिबंधीय फल है पर इस की खेती बिहार की समशीतोष्ण जलवायु में कामयाबी से की जा रही है. वायुमंडल का तापमान 10 सैंटीग्रेड से कम होने पर पपीते की वृद्धि, फलों का लगना व फलों की गुणवत्ता प्रभावित होती है.

पपीते की अच्छी बढ़वार के लिए 22 सैंटीग्रेड से 26 सैंटीग्रेड तापमान उपयुक्त पाया गया है. औसत वार्षिक वर्षा 1200-1500 मिलीमीटर सही होती है. पपीते का पकाने समय शुष्क व गरम मौसम होने से फलों की मिठास बढ़ जाती है.

उन्नतशील प्रजातियां

वर्तमान में भारत में पपीते की कई किस्में विभिन्न प्रदेशों में उगाई जा रही हैं, जिन में प्रमुख रूप से 20 उन्नत किस्में हैं और कुछ स्थानीय व विदेशी किस्में हैं.

स्थानीय किस्मों में रांची, बारवानी व मधु बिंदू प्रमुख हैं. विदेशी किस्मों में वाशिंगटन, सोलो, सनराइज सोलो व रैड लेडी प्रमुख हैं. है. इस का फल अत्यंत स्वादिष्ठ और सुगंधित होता है. फल का आकार मध्यम से ले कर साधारण बड़ा होता है. इस का वजन 1-2 किलोग्राम तक होता है.

पपीते के पकने पर फल के गूदे का रंग गहरा होता है व गूदा ठोस होता है. गूदे की मोटाई 4.0 सैंटीमीटर और कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 10 से 13 ब्रिक्स होती है. फलों की पैदावार 45 किलोग्राम प्रति पेड़ होती है.

* आलोक कुमार सिंह, आरएस सेंगर

पपीते की कुछ प्रमुख किस्मों की जानकारी इस प्रकार है :

पूसा डेलिसियस

यह एक गायनोडायोसियम प्रजाति है. इस में मादा और उभयलिंगी पौधे निकलते हैं व उभयलिंगी (ऐसे पौधे, जिन में नर और मादा दोनों के लक्षण होते हैं) पौधे भी फल देते हैं.

यह 80 सैंटीमीटर की ऊंचाई से फल देता

पूसा मैजेस्टी

इस प्रजाति में भी पूसा डेलिसियस की तरह मादा व उभयलिंगी पौधे निकलते हैं. यह 50 सैंटीमीटर की ऊंचाई से फल देता है और एक फल का वजन 1.0-2.5 किलोग्राम तक होता है. यह किस्म पैदावार में उत्तम है व फल में पपेन की मात्रा ज्यादा पाई जाती है.

पपेन कच्चे पपीतों से निकाले गए दूध को

सुखा कर बनाया जाता है. इस के फल ज्यादा टिकाऊ होते हैं व इस में विषाणु रोग का प्रकोप कम होता है. पकने पर गूदा ठोस व पीले रंग का होता है. एक पेड़ से तकरीबन 40 किलोग्राम फल मिलते हैं. इस के गूदे की मोटाई 3.5 सैंटीमीटर होती है. यह प्रजाति सूत्रकृमि अवरोधी है.

पूसा ड्वार्फ

इस किस्म में नर व मादा पौधे निकलते हैं. पौधे बौने होते हैं और इस में फलन जमीन से 40 सैंटीमीटर की ऊंचाई से होता है. एक फल का औसत वजन 0.5 से 1.5 किलोग्राम होता है. इस की पैदावार 40-50 किलोग्राम प्रति पौधा है. फल के पकने पर गूदे का रंग पीला होता है. गूदे की मोटाई 3.5 सैंटीमीटर होती है. पौधा बौना होने के चलते इसे आंधी या तूफान से कम नुकसान होता है.

पूजा जौइंट

इस किस्म के पौधे बड़े होते हैं. इस में फलन जमीन से 80 सैंटीमीटर की ऊंचाई से होता है. इस के फल बड़े होते हैं और एक फल का वजन 1.5 से 3.5 किलोग्राम तक होता है. इस के गूदे का रंग पीला व मोटाई 5 सैंटीमीटर होती है. प्रति पेड़ औसत उपज 30-35 किलोग्राम है. यह किस्म पेठा और सब्जी बनाने के लिए काफी सही है.

पूजा नन्हा

यह पपीते की सब से बौनी प्रजाति है, जो गामा किरण द्वारा विकसित की गई है. यह 30 सैंटीमीटर की ऊंचाई से फलना शुरू करता है. इस में प्रति पेड़ 25 किलोग्राम फल मिलता है. इस के गूदे का रंग पीला व मोटाई 3 सैंटीमीटर होती है. यह प्रजाति सघन बागबानी व गृह वाटिका के लिए काफी सही पाई गई है.

कुर्ग हनी ड्यू

यह किस्म भारतीय बागबानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु के केंद्रीय बागबानी प्रयोग केंद्र चेट्टाली द्वारा चयनित किस्म है. इस का चयन हनी ड्यू नामक प्रजाति से किया गया है.

इस के पौधे मध्यम आकार के होते हैं. इस के फल लंबे, अंडाकार आकार व मोटे गूदेदार होते हैं. फल का वजन 1.5 से 2.0 किलोग्राम होता है. गूदे का रंग पीला होता है. इस में कुल घुलनशील ठोस 13.50 ब्रिक्स होती है. प्रति पौध औसत उपज 70 किलोग्राम तक होती है.

सूर्या

इस प्रजाति के फल मध्यम आकार के होते हैं, जिन का औसत वजन 600-800 ग्राम तक होता है और बीज की कैविटी कम होती है. फल का गूदा गहरा लाल रंग का होता है. फल की भंडारण क्षमता भी अच्छी है. प्रति पौध औसत उपज 55-65 किलोग्राम तक होती है.

तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर की प्रजातियां इस प्रकार हैं :

कोयंबटूर-1 : यह प्रजाति साल 1972 में रांची प्रजाति से चयनित की गई है. इस के पौधे छोटे होते हैं. फल मध्यम आकार के गोल होते हैं. इन का गूदा पीले रंग का होता है. प्रति पौध औसत उपज 40 किलोग्राम तक होती है.

कोयंबटूर-2 : इस किस्म का चयन साल 1979 में स्थानीय किस्म से किया गया है. इस प्रजाति में पपेन प्रचुर मात्रा (4 से 6 ग्राम प्रति फल) में पाया जाता है. फल का औसत वजन 1.5 से 2.0 किलोग्राम होता है. फल में 75 प्रतिशत गूदा होता है, जिस की मोटाई 3.8 सैंटीमीटर व रंग नारंगी होता है. फल का आकार बड़ा होता है. प्रति पौध औसत उपज 80-90 फल हर साल होती है. पपेन की औसत उपज 250 से 300 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है.

कोयंबटूर-3 : यह प्रजाति कोयंबटूर-2 व सनराइज सोलो के संकरण द्वारा साल 1983 में विकसित प्रजाति है. यह ताजे फल के रूप में खाने हेतु सर्वोत्तम किस्म है. इस के फल मध्यम आकार के होते हैं, जिन का औसत वजन 500 ग्राम से 800 ग्राम तक होता है. गूदे का रंग लाल होता है. प्रति पौध औसत उपज 90 से 120 फल होती है.

कोयंबटूर-4 : यह किस्म साल 1983 में कोयंबटूर-1 व वाशिंगटन के संकरण से विकसित की गई है. पौधे के तने व पत्ती के डंठल का रंग बैगनी होता है. फल मध्यम आकार का होता है, जिस का औसत वजन 1.2 से 1.5 किलोग्राम तक होता है. फल में गूदे का रंग पीला होता है. औसत उपज हर साल 80 से 90 फल प्रति पौधा होती है.

कोयंबटूर-5 : इस प्रजाति का चयन साल 1985 में वाशिंगटन प्रजाति से किया गया, जो पपेन उत्पादन के लिए खास है. प्रति फल लगभग 14.45 ग्राम शुष्क पपेन पाया जाता है.

पत्ती के डंठल का रंग गुलाबी होता है. फल का औसत वजन 1.5 से 2.0 किलोग्राम होता है. 2 साल के फसल चक्र में औसत उपज 75-80 फल प्रति पौध होती है. शुष्क पपेन की औसत उपज 1500-1600 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है. इस में 72 फीसदी प्रोटीन पाया जाता है.

कोयंबटूर-6 : इस प्रजाति का चयन साल 1986 में जौइंट प्रजाति से किया गया. यह प्रजाति पपेन उत्पादन व ताजा खाने के लिए उपयोगी पाई गई है. इस के पौधे छोटे होते हैं व फल की तुड़ाई पौध रोपण के 8वें महीने से शुरू हो जाती है.

फल का औसत वजन 2 किलोग्राम तक होता है. फल के गूदे का रंग पीला होता है, जिस में कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 13.60 ब्रिक्स होती है. प्रति पौध औसत उपज 80-100 फल है.

प्रति फल शुष्क पपेन की मात्रा 7.5 से 8.0 ग्राम तक होती है.

कोयंबटूर-7 : यह पूसा डेलिसियस, कोयंबटूर-3, सीपी-75 व कुर्ग हनी ड्यू के बहुसंकरण द्वारा साल 1997 में विकसित संकर किस्म है. यह एक गायनोडायोसियस प्रजाति है. इस में फल जमीन से 52.2 सैंटीमीटर की ऊंचाई से लगते हैं. इस के फल लंबे, अंडाकार होते हैं. इस किस्म में गूदे का रंग लाल होता है. फल में कुल घुलनशील ठोस की मात्रा 16.7 ब्रिक्स होती है. यह प्रजाति 112.7 फल प्रति पौध उपज देती है, जो 340.9 टन प्रति हेक्टेयर है.

रांची : यह प्रजाति रांची, झारखंड के आसपास छोटा नागपुर क्षेत्र में पाई जाती है. इस में नर, मादा व उभयलिंगी तीनों तरह के पेड़ मिलते हैं. इस के फल काफी बड़े होते है और उभयलिंगी फल का वजन 15 किलोग्राम तक पाया गया है.

मादा पेड़ से एक फल का वजन 5 से 8 किलोग्राम तक पाया गया है, जो दूर से देखने पर कद्दू जैसे दिखाई देते हैं. लेकिन इस का बीज बाहर कहीं भी ले जा कर बोने से फल का वजन घट जाता है.

प्रवर्धन : पपीते की खेती करने के लिए मुख्य रूप से बीज द्वारा पौध तैयार की जाती है. खेत में रोपने के बाद यह जल्दी उत्पादन देने लगते हैं, इसलिए इस में ऐसे बीज का चुनाव करना चाहिए, जो स्वस्थ व अच्छी पैदावार देने वाले हों. बीज किसी शोध संस्थान या प्रमाणित बीज भंडार से ही खरीदने चाहिए.

नर्सरी प्रबंधन

पपीते की खेती के लिए पौध तैयार करना ही खास काम है. खेत में पौधों को 1×8 1×8 मीटर की दूरी पर लगाना हो तो एक हेक्टेयर में रोपने के लिए 250 से 300 ग्राम बीज की जरूरत पड़ती है.

बीज बोने के लिए 6×8 इंच आकार के आकार के पौलीथिन बैग प्रयोग में लाए जाते हैं. बीजों का उपचार कवकनाशी से करना चाहिए और बीजों को 1.0 सैंटीमीटर की गहराई पर पौलीथिन की थैलियों में बीचोंबीच बोना चाहिए. बाद में स्वस्थ पौधे को छोड़ कर शेष पौधों को निकाल देना चाहिए.

बीज बोने के बाद उन्हें समयसमय पर सिंचाई करते रहना चाहिए. पौध 20 से 25 सैंटीमीटर की हो जाने पर रोप देना चाहिए. बीजों को थैलियों में बोने से पहले 200 पीपीएम जिब्रेलिक से उपचारित करने के बाद बोने से जमाव की दर बढ़ जाती है व पौधों की ऊंचाई में वृद्धि होती है.

पौध तैयार करने का समय

साधरणतया पपीते का बीज नर्सरी में रोपने की निर्धारित तिथि से 2 महीने पहले बोना चाहिए. इस प्रकार पौधे मुख्य क्षेत्र में रोपाई के समय तकरीबन 15-20 सैंटीमीटर की ऊंचाई के हो जाते हैं.

बिहार में जहां पानी जमा होने की समस्या है और बारिश के दिनों में विषाणु रोग अधिक तेजी से फैलते हैं, वहां अगस्त के अंत में या सितंबर के शुरू में नर्सरी में बीज बोना चाहिए.

खाद और उर्वरक

पपीते को बहुत अधिक खाद देने की जरूरत होती है. प्रत्येक फलने वाले पेड़ों को 200-250 ग्राम नाइट्रोजन, 200-250 ग्राम फास्फोरस व 250 से 500 ग्राम पोटाश देने से अच्छी उपज प्राप्त होती है.

साधारणतया उपरोक्त खाद तत्त्वों के लिए यूरिया 450 से 550 ग्राम, सिंगल सुपर फास्फेट 1200 से 1500 ग्राम व म्यूरेयेट औफ पोटाश 450-850 ग्राम ले कर उन्हें मिला लेना चाहिए और 4 भागों में बांट कर प्रत्येक महीने के शुरू में जुलाई से अक्तूबर माह तक पेड़ की छांव के नीचे पौधे से 30 सैंटीमीटर की गोलाई में दे कर मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए.

खाद देने के बाद हलकी सिंचाई कर देनी चाहिए. इस के अलावा सूक्ष्म तत्त्व बोरोन (1 ग्राम प्रति लिटर पानी में) और जिंक सल्फेट (5 ग्राम प्रति लिटर पानी में) का छिड़काव

पौधा रोपने के चौथे व 8वें महीने में करना चाहिए.

सिंचाई

पपीते के सफल उत्पादन के लिए बगीचे में जल प्रबंधन बहुत ही आवश्यक है. जब तक पौधा फलन में नहीं आता, तब तक हलकी सिंचाई करनी चाहिए, जिस से पौधे जीवित रह सकें. अधिक पानी देने से पौधे काफी लंबे हो जाते हैं. विषाणु रोग का प्रकोप भी ज्यादा होता है. ऐसा देखा गया है कि पानी की कमी से फल झड़ने लगते हैं.

पपीते में टपकन सिंचाई प्रणाली (ड्रिप) के तहत 8-10 लिटर पानी प्रतिदिन देने से पौधे की बढ़वार व उपज अच्छी मिलती है. मिट्टी में नमी बनाए रखने के लिए पौधे के तने के चारों तरफ सूखे खरपतवार या काली पौलीथिन की पलवार बिछानी चाहिए.

फूल व फल लगना

पौधे लगाने के लगभग 6 महीने बाद मार्चअप्रैल महीने से पौधों में फूल आने लगते हैं. पपीते में मुख्य रूप से 3 प्रकार के लिंग नर, मादा व उभयलिंगी पाए जाते हैं. नर व उभयलिंगी पौधे वातावरण के अनुसार लिंग परिवर्तन कर सकते हैं, पर मादा पौधे स्थायी होते हैं. नर व मादा पौधों की पहचान फूल के आधार पर कर सकते हैं. ज्यों ही नर पौधे दिखाई पड़ें, तुरंत काट कर खेत से निकाल देने चाहिए. पर परागण के लिए खेत में 10 फीसदी नर पौधे अवश्य छोड़ देने चाहिए.

उपज

औसतन प्रति पेड़ 50 से 1000 किलोग्राम तक उपज हासिल होती है. फल का औसत भार 0.5 किलोग्राम से 3.0 किलोग्राम तक होता है. पपीते के एक अच्छे बाग से 300 से 350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर फल प्रतिवर्ष प्राप्त होते हैं. प्रति हेक्टेयर उपज बाग में फल लगने वाले पौधों की संख्या व जाति पर भी निर्भर करती है. ■

मनोहर कहानियां

मनोहर कहानियां पर आधारित
क्राइम, थ्रिलर, हॉरर
की अनोखी पेशकश अब TATA sky अद्भुत कहानियाँ पर

Tune in to 144

आपराधिक घटनाओं की सत्य और ताजा रिपोर्टिंग

पुलिस अधिकारियों से बातचीत पर आधारित

पैसा, प्रेम, सैक्स, धोखा, छलफरेब, प्रपंच का परदाफाश

अपराधों के बारे में जानिए और सतर्क रहिए

खरीदें
बुक स्टाल से
हर महीने 10 तारीख
तक नया अंक
उपलब्ध

हर माह कथा रूप में नई कहानियां नए तेवर और कलेवर के साथ

केवल Rs 500 में वार्षिक ग्राहक बने और प्रतिमाह रजिस्टर्ड डाक से पाएं अपनी मनपसंद पत्रिका मनोहर कहानियां

Subscription@delhipress.in

To subscribe call toll free at: 1 800 103 8880, Landline 011 41398888, Ext. 119/221/264 (Monday to Saturday 10.00 am to 6.00 pm)
For subscribing online, kindly visit www.delhipress.in/subscribe

साथ ही पढ़िए सत्यकथा हर महीने

DELHI PRESS MAGAZINES

33 Magazines | 10 languages | 2.2 Crore Readers

कुछ कहती हैं तसवीरें

करामाती मशीनें. दुनियाभर में मक्का की खूब खेती की जाती है. अमेरिका के दक्षिण डकोरा क्षेत्र के सालेम में किसान मक्का की कटाई और छंटाई के लिए बड़ीबड़ी कंबाइन मशीनों का इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि वहां के खेतों का क्षेत्रफल बहुत ज्यादा होता है और वहां मजदूरों की कमी के चलते ज्यादातर काम मशीनों से ही निबटा लिए जाते हैं.

खेतीकिसानी की पाक्षिक पत्रिका

मात्र 499 रु. सालाना दे कर हर पखवारे 3 प्रतियां रजिस्टर्ड डाक से घर बैठे मंगाएं

फार्म एन फूड

दिल्ली प्रैस की पत्रिका

साल भर में मिलेंगी 72 प्रतियां

मात्र 499 रु. में

रजिस्टर्ड डाक से

खुद पढ़ें, दूसरों को भी पढ़वाएं

फार्म एन फूड पत्रिका का ह्वाट्सएप नंबर : 08447177778

यह फार्म अपने चैक / डी.डी. के साथ भेजें

नाम: .....

पता: .....

..... पिन: .....

मोबाइल नं.: ..... फोन नं.: ..... ई-मेल: ..... WhatsApp Yes No

चैक / डी.डी. नं.: ..... तिथि: .....

DELHI PRAKASHNAN VITRAN PRIVATE LIMITED के पक्ष में देय होगा.

क्रैडिट कार्ड: ☐ अमेक्स ☐ वीसा ☐ मास्टर कार्ड ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ अंतिम तिथि: MM ☐☐ YY ☐☐

जारी करने वाले बैंक का नाम: ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

_____ हस्ताक्षर _____ तिथि

नियम व शर्तें:

कृपया इस फार्म को भर कर चैक/डीडी के साथ इस पते पर भेजें : DELHI PRAKASHAN VITRAN PRIVATE LIMITED ई-8, झंडेवाला एस्टेट, ग्राउंड फ्लोर, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. चैक/डीडी का भुगतान भारत में मान्य हो. यह विशेष योजना कुछ समय के लिए ही है. पत्रिका डिलीवरी के लिए 3-4 हफ्तों का समय दें. पत्रिका की प्रति आप को डाक द्वारा प्राप्त होगी. समस्त विवाद केवल दिल्ली न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र के अधीन है. दिल्ली प्रैस का सब्सक्रिप्शन विभाग : टोल फ्री नंबर 1800 103 8880 (सभी लैंडलाइन और मोबाइल द्वारा मान्य, सोमवार से शनिवार सुबह 10:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक) फोन नंबर : 011-41398888, एक्सटेंशन : 119, 221, 264 मोबाइल/एसएमएस/ह्वाट्सएप नंबर : 08588843408 फैक्स : 011-41540714/41398885, ईमेल: subscription@delhipress.in औनलाइन http://www.delhipress.in/subscribe पर भी आप सब्सक्राइब कर सकते हैं.

(REGISTERED) RNI DELHIN/ 25645/2008/DL(C)-14/1189/20-22 P.O. SRT Nagar ND-55 Posting Dt. 8 to 14, Pgs. 36 Published on 1/4/2020

स्टोमाफिट®

टैबलेट व लिक्विड

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

रखे स्टमक फिट... पेट फिट...आप फिट

बिस्मथ है कारगर

एच. पायलोरी, पैप्टिक अल्सर या पेट से जुड़ी अन्य समस्याओं के लिए बाजार में मौजूद ऐंटीबायोटिक दवाएं और ऐंटासिड कुछ समय के लिए राहत तो देते हैं मगर समस्या जस की तस रहती है. स्टोमाफिट में मौजूद बिस्मथ विकार को बढ़ने से रोकने के साथसाथ उस का निदान भी करता है. इसके प्रयोग के बाद धीरेधीरे पाचन क्रिया भी सुचारु रूप से काम करने लगती है.

आस्ट्रेलिया के डॉ. बेरी जे. मार्शल को बिस्मथ के इस्तेमाल से एच. पायलोरी को जड़ से मिटाने में सफल होने की वजह से 2005 का मेडिसन में नोबल पुरस्कार मिला.

फायदा पहली खुराक से ही

2 चम्मच/2 टैबलेट दिन में 3 बार खाने के बाद आधा कप पानी के साथ 4 हफ्तो तक

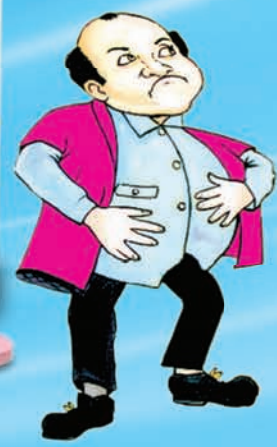

अपच गैस एसिडिटी से छुटकारा

100ml. 200ml. 450ml में उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फोन : 8447977889/999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com
फ्री होम डिलीवरी 8447977999